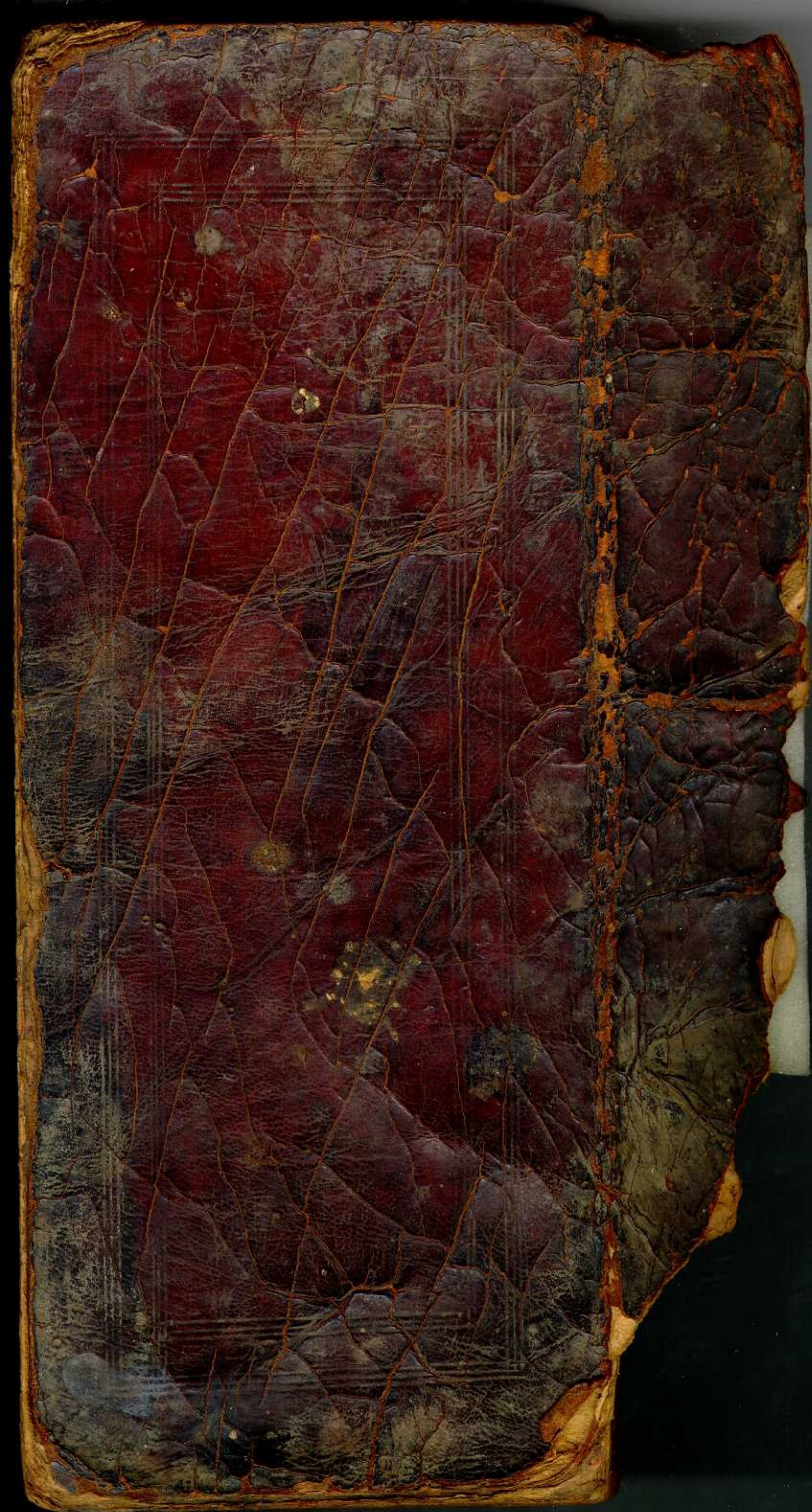
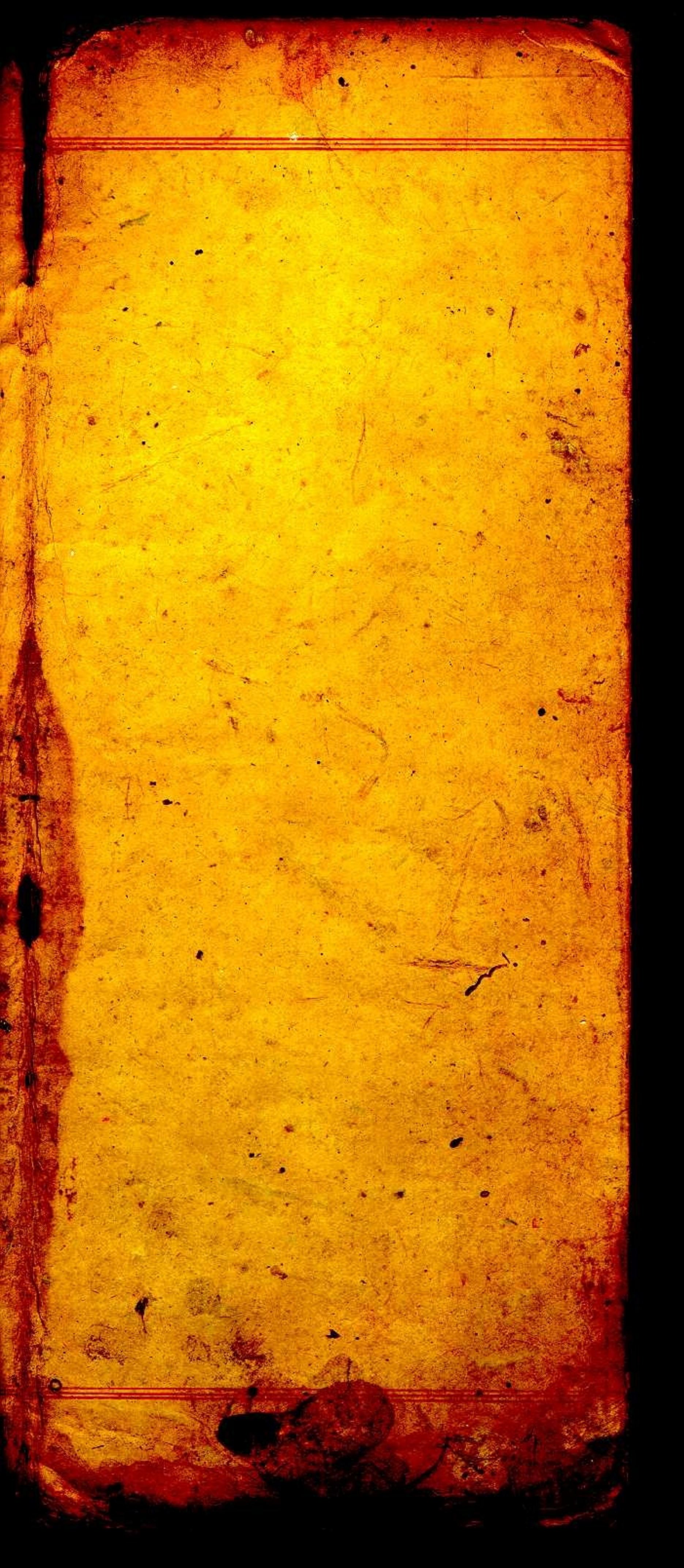


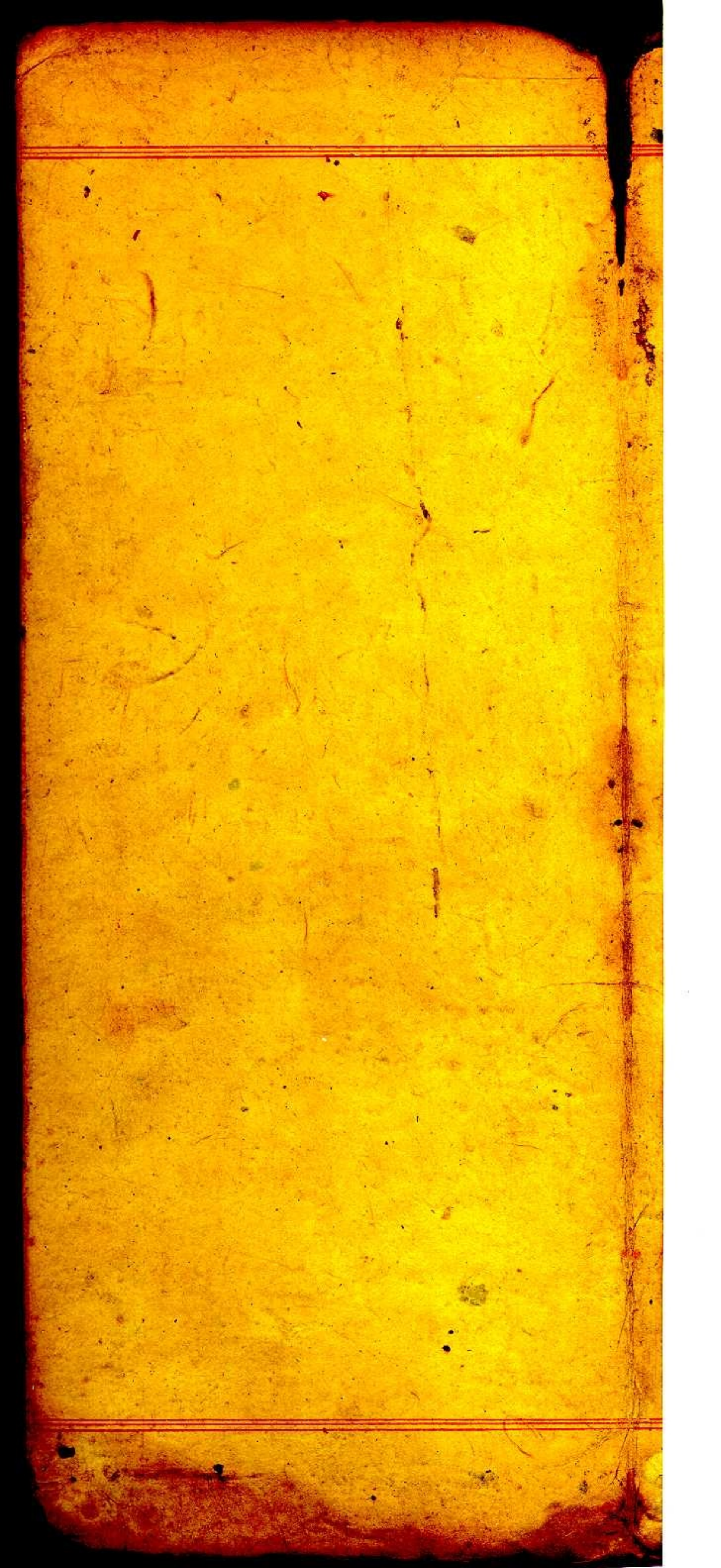


SEAN JAY TAYLOR

1.613

1613







ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ ॐ नमः
हाते नवाये ॥ ॐ नमः कुङ्कि काये ॥
सूर्या अर्घ्य ॥ पूष्यराजन ॥ ॐ नमः
श्रीगुनूपादकस्य पादका पूजया
मि ॥ ॥ वैज अस्वधुमधुलाका वति
॥ गुननमस्कान ॥ वैज कलपाशास्त्रा
यपादकां ॥ वैज अर्घ्यपाशास्त्राय पाद
कां ॥ वैज पद्मास्त्राय पादकां ॥ वैज क
र्मास्त्राय पादकां ॥ वैज किसि २ वि ३
काक्षायै ॥ ॐ अस्त्राय रुद्र पादकां
॥ वैज वैश्वै रुद्र वज्रपञ्चनखा ॥ वैज
चलमकुलकुलमचलद्वीकुरुद्र
स्त्रा ॥ कलसाधन ॥ किसि २ वि ३
काक्षायै ॥ ॐ अस्त्राय रुद्र रुद्रस्त्रा
पादकां ॥ वैज नमो रुगवतीक्ष्णम
लाये ह्रीं श्री अंगुष्ठायै पादकां ॥ वैज
श्री कुङ्कि काये कुलदि पाये ह्रीं श्री क
र्मास्त्रायै पादकां ॥ वैज ह्रीं ह्रीं व
र्चलसिखद्वै श्री मध्वमाये पादकां ॥
वैज धात्र अर्घ्या न अर्घ्या नामूखी वद्व
नूपाये ह्रीं श्री अनामिकाये पादकां ॥

ॐ जं छं छं मरुता निकाये जौं शाक
निकुये पादकां ॥ किसि शिविचका क
नाये झुशी फलतलाय रुट पादकां ॥
ॐ तिकलांगन्याम ॥ ॐ जनमारु गव
तिहत्कमलाये शाकुडवकाय पाद
कां ॥ ॐ जं छं छं किकाये कुलदीपा
ये शापूरवकाय पादकां ॥ ॐ जं जौं
जौं द्रवर्चलसिखे शादकवका
य पादकां ॥ ॐ जं धानं अंधानं अंधा
नामखीव दूरूपाय शाकुलनवका
य पादकां ॥ ॐ जं छं छं मरुता निका
ये जौं शापश्चिमवकाय पादकां ॥
ॐ जं किसि शिविचका कनाये शाउ
डवकाय पादकां ॥ ॐ तिवकन्याम
॥ ॥ ॐ जनमारु गवतिहत्कमला
ये जौं शाददयाय नमः ॥ ॐ जं छं छं
किकाये कुलदीपाये जौं शाठिले
सखादा ॥ ॐ जं जौं जौं द्रवर्चलसिखे
द्रुशीसिखाये दोषट् ॥ ॐ जं धालं अ
ंधानं अंधा नामखीव दूरूपाये रुशी
कवचाय द्रुं ॥ ॐ जं छं छं मरुता नि

काये हो श्री नरु न्याय वाषट् ॥ वैं ग
किलि २ विचैका कीनाये क ४ अस्त्राय
रुह ॥ **०० किमि न्यास ॥** ॥ वैं ग ग
लपा शास्त्राय पादकां ॥ कमलास्त्रा
यपादकां ॥ वैं ग झूं आनन्द हाकि
हेनवानन्द विना **धु** विपत्तय झूं
श्रीजलपाठ रुहा **वि** कायपा **धु**
दकां ॥ वैं ग जाँ ददयाय नमः ॥
वैं ग जाँ धि वरुहा स्वाहा ॥ वैं ग झूं धिखा
य वाषट् ॥ वैं ग झं क वचायं झूं ॥ वैं ग
जाँ नरु न्याय वाषट् ॥ वैं ग झं आस्त्रा
य वाषट् ॥ **आवाहनादि ॥** **खनूमडां**
दर्शयतु ॥ कुडि काय विद्महे कुन
दिपाय धीमहे तन्ना कुडि प्रचाद
यातु ॥ **गनमस्तु न आत्मादि सर्वपा**
दने ॥ ॥ **अर्घपाशास्त्राय पादकां**
॥ वैं ग पुं जाँ जाँ झं क ४ पस्त्रु न २ धा
न २ न वरु न २ रूप वरु २ प्र वरु २
कह २ वम २ दम २ घातय २ विद्या
तय २ विधि २ दूँ २ रुट् कुं श्रीमहा
कीमावीका विचैपादकां ॥ वैं ग

मूं॥ आनन्दहाकिरेववानन्दवा
नाधिकतय॥ श्रीमहाविद्यावा
श्वरीकुं॥ अर्घपाशरुद्रावि
कायपादकं॥ ॥ पञ्चदशसंप्रश्ना
अवाहनादि॥ ॥ यानिमूढादर्शय
त॥ ॥ अर्घपाशस्तत्त्वानकायाश
रुद्रशुद्धियाया॥ वैनाहि॥ ॥ ज्ञाददय
॥ श्रीमुख॥ मुंवरु॥ क्षौशिन॥ लाम॥
विलाम॥ क्षौशिन॥ मुंवरु॥ श्रीमुख
॥ ज्ञाददय॥ वैनाहि॥ ॥ तिरुत्तुडि
॥ वैजविलपनंपादकं॥ ॥ ज्ञाविलरु
त्तुपादकं॥ ॥ श्रीसर्वजनमादनीपा
दकं॥ ॥ आकरवनीपादकं॥ ॥ मुंतिरु
त्तुअरुत्तुपादकं॥ ॥ क्षौनानाचुञ्ज
लेक॥ ॥ पूपालेवपूष्यपादकं॥ ॥
आनन्दहाकिरेववानन्दवावाधि
पतय॥ आत्मपूष्यपादकं॥ ॥ अर्घ
पाशद्वयन॥ वामअनात्मिका॥ त्रिधाअ
त्माशिवसिंश्यत्॥ ॥ तिरुत्तुडि
आत्मपूजा॥ ॥ पूष्यपादकं॥ ॥ द
सांपादकं॥ ॥ विन्दुशिव॥ अर्घपाश

सकायाव. वलि विय ॥ वैजं ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
४ वलि गृह २ स्वाहा ॥ धूप ॥ ॥ ॥
तत्तामालनाप (धूप) ॥ ॥

तत्तामालनाप ॥ वलि दया ॥ मयूनास्त्रा
यनमः ४ वैजं वाँ वाँ वूँ वूँ वाँ वूँ वाँ द
वा पूरु वरु कनाथाय कपिल वैज
गा. हल्लहा सूत्र. जिन रुका नाम रव.
पूयंगम. धूपं. वलि पूजा अरु वरु २
वृद्धि रुग वनम सुल मधु अथ प
यं नाना वलि गृह २ स्वाहा ॥ ॥

नवास्त्राय पादुकां ॥ वैजं ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
ॐ ॥ ॐ ॥ पाप वल द्विप धर्मा दवा
महा वै. काल रुपा लाय अरु वरु
वरु वरु रुज. जिन रुका य षट्ठांग
खड्ग रुतक. धूल पाती. माहा कपा
लमा ला रु वनाथ. विष्णु काटि मम
प्रहाय. वरु रुग वन रु नव व
पन रु. थापय नाना वलि गृह २
मम विष्ठा रु दय जाँ जाँ रु रु
स्वाहा ॥ ॥ सिंहलास्त्राय पादुकां ॥

सवास्त्रायपादकां॥ ॐ यौ ऊकश्चि
यागिनानां सर्वपा॥ ० जा पूरुज्ज
सदजा यागजा गङ्गा सदादजा
ऊकश्चि यागिनीनी रुचलीरुच
ली एवलादिश्वनी एकाद्वि द
वाहनी चरुष्य नवाहनीनां ऊ
स्थापयं नानावलिगृह्ण २ मम सिद्धि
कर्वतु ३ रुट् स्वाहा॥ ॥ प्रता

स्त्रायपादकां॥ ॐ यौ ऊकश्चि
द्विचाम् एवनी व पूरुज्ज
३ स्वाहा॥ ॥ मसास्त्रायपादकां

॥ ॐ यौ गौ गौ गौ गौ गौ गौ गौ गौ
गौ गौ गौ गौ गौ गौ गौ गौ गौ गौ
नाय स्ववल्गुनाम्ना सहिनायवलि
गृह्ण २ स्वाहा॥ आवाहनादि दधु
गर्जनी यानि विन्दु गङ्गा मङ्गा दर्हा
यन्॥ थन २ मम सुनजाप॥ स्वाहा
॥ गोष्ठापुङ्गुमाले गगननव
तं रुपं यागिनी ३ वाम् एव
वृषाद्विहयहला विघ्नहलं ग

१६ सं। पृष्ठायाधूपदीपा मिषमधू
वलिहि. चर्चिमारूपितागि. चर्क
पूष्पकानां दवहु विवहनुं. रुकि
मूकिपदाता॥ ॥ कतासाधन ॥

तामूलादिहि॥ ॥ श्रीसम्भरुनि
आवाहन॥ ॥ वैंग श्रुं श्रुनकमशु

लशाआदिदवपादूकां॥ वैंग श्रुं

श्री पादूकां॥ ग॥ नवास्त्रायपा

दूकां॥ ध्यान॥ प्रतासनस्त्रि

श्रुतदवं नीवव. श्रुकवकुकं।

श्रिनेशखरुजं दवं. खरुजं रुक

धननी॥ उमवृखदा रुकं. विन्द

कापालधननं। मृगुहादादिरु

षाङ्ग. ध्यानं रुतपालकं॥ ध्यान

पादूकांपूजयामि॥ वैंग श्रुं श्रुं श्रुं

श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं

लिष्टक २ स्त्राहा॥ प्राप्रवत्तद्विपध

म्रादवी. श्रीमहाकालरुतपालाय

पादूकां॥ वलिष्टक २ स्त्राहा॥ ॥

मयूनास्त्रायपादूकां॥ ध्यान॥ वैंग

महामयूत्रमावृत्ता कुमालवानव
पकं नक्तमूत्रादिरूपाङ्गं दक्षुष
किवनधुमां विन्दुमूत्राकनध्रीमा
नूत्रकांवनविरूषनं नवंश्चक्षाय
नदवंवदकनाथं नमाम्यहं ॥ **ध्यान**
पूषं पादकां ॥ श्रीकौकुलपुरुवद
कनाथाय पादका पूजयामि ॥ व
लिगृह्णस्वाहा ॥ **॥ मूसास्त्राय**
पादकां ॥ ध्यान ॥ मूसापृष्टासनसं
व. गुरुङ्गगजवकुलं तिनरुप्रशु
नदकं मूलाक्षवेवध्वनकं नागय
क्षापवीर्यश्च सर्वदक्षिणनासनं
वंविघ्नहर्त्रं चालागसनाथमहात्म
नं ॥ **ध्यान पादकां ॥** जै गं गौ गौ गौ गौ
श्रीकृलगणेश्वनाय पादकां ॥ **न**
मकुल वलिगृह्णस्वाहा ॥ आवाह
नादि ॥ दक्षु नकुनी गजमूत्रादक्ष
यत् ॥ जापा ॥ स्फुट ॥ **॥ नमो क**
नमार्चनं ॥ ॥ न्यास ॥ हुं हूं स्रं अ
स्तु यरुद्र ॥ हुं हूं स्रं कनिष्ठकाय

नमः॥ ॐ स्वादिफलश्रुद्धिनाम॥ अ
मना॥ आध्वनसकयपादकां॥ दी
वादास्त्रायपादकां॥ स्कंदास्त्रायपा
दकां॥ वृषास्त्रायपादकां॥ क्षत्रास्त्रा
यपादकां॥ पञ्चास्त्रायपादकां॥ कक्ष
नास्त्रायपादकां॥ कर्षिकास्त्रायपा
दकां॥ पद्मास्त्रायपादकां॥ ध्यान॥
शुद्धहृदिकसंकाशजिनशुचशु
भोलिकंवनदाहयहनंदवमशु
मालाधनंदनं एवं ध्यात्वा महाद
वः॥ ॐ मासार्थसिद्धिकं॥ ॥ पूज
नं॥ अध्वनवज्र॥ ॐ ईं सः ४ मृत्युंज
योयः अमृतिश्च नमो हारुनवाय
अमृति लक्ष्मीः किं सदिनाय ॐ
ईं सपादकां॥ ॥ मूलमनुष्यः वि
याः ॐ लि॥ ॐ ईं स हृदयाय नमः
॥ ॐ स्वादि यत्नः ॐ नमः पूष॥ मूल
नवलि॥ ॐ वृद्धः ॐ नमः ॥ ॐ विष्णु
वनमः ॥ ॐ वृद्धाय नमः ॥ ॐ ॐ श्व
नाय नमः ॥ ॐ ईं स अमृतिश्च नाय

मृत्पुत्राय नमः॥ ॐ पद्माय नमः॥
॥ ॐ मार्गशीर्षाय नमः॥ ॐ मरुतवे नमः॥
ॐ संवत्सराय नमः॥ ॐ काला
दिसप्तमसूदयानमः॥ ॐ ॐन्दादि
दक्षालोकपालस्थानमः॥ ॐ आदि
स्यादिनवग्रहस्थानमः॥ ॐ अर्ध
न्यादिनक्षत्रस्थानमः॥ ॐ विष्णुं म
दियोगस्थानमः॥ ॐ मखादिद्वाद
शवासिस्थानमः॥ ॐ मूद्रांशुस्थानम
॥ ॐ गङ्गादिसप्तदशगवस्थानमः॥
॥ ॐ अष्टविंशतिविंशस्थानमः॥ ॐ च
सिद्धानादिसप्तमषिस्थानमः॥ ॐ
अनंतादिअष्टकुलनागवाङ्स्थान
मः॥ ॐ क्षान्तिकलाय नमः॥ ॥ ॐ
वविद्या॥ निवृत्ति॥ पतिष्ठा॥ त्रिंशं
अलि॥ ॐ जम्बाकुलवृक्षमहास
नकलनीर्थ ॥ ॐ मरुदवनाकला
तलावद्वि ॥ ॐ नूडात्मन आत्म
विद्याधिवत्तलाय ॥ ॐ मृगीधामं
पुरुषकलसमूहय ॥ ॐ ॐ पाद

को॥ शिखाल्धनवलि॥ आवाध
धनमूडा॥ आपा॥ स्फाड॥ वत्ताषधि
द्यादि॥ ॐ निकलसपूजा॥ ॥
तताक्रमपूजा॥ न्यासा॥ अधानाकं॥
तुं विकसितपद्मसहिनासिन्धुपा
नादनूनवचिनागकायविद्याविप
र्षु॥ पत्रममृकयद्यंतृप्तमानन्दवृपं
सुत्रगणविनविद्यं॥ नाषितादवदी
पा॥ ॥ आधानसकल्यादि॥ ॐ सिंह
स्त्रायपादको॥ ध्यान॥ गुलाधुवमः
स्थपानदिनाद्यं॥ खातवपूर्वाकता
त्यन्नामरुदवीदिव्यकन्यामनात्र
मा॥ लाङ्कालसनिरुदवीपद्मनाग
समप्रहा॥ अष्टादशरूजादवीवत्त
वकावरूपितं॥ सामवृषधनादवी
जिनजासचजोवनि॥ खड्गहिधूलव
ज॥ ॐ दिष्टिमंमृज्वंरुथा॥ गताप
द्यववपातुंदद्विषनविनाजितं॥
रुतकंवाकूं संघं॥ मृगुखद्योऽं
कृत्तया॥ निवात्यवदवविन्दुवाम

रुक्मिणीधननी॥ दिव्यावल्लभा
पादमारुनक्षरुषिता॥ स्वर्गपद्मा
सनासीनं वधपद्मासनस्त्रिंशं॥ एव
ध्यात्वा महादेवी वावूनी दिव्यनूपि
नी॥ ध्यानपूर्य्यपादकां॥ अर्घ्यानां रुक्म
कुनधनवलि॥ शिवाञ्जलि॥ ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥ ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥ ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥ ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥ ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥ ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥ ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥ ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥ ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥ ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥ ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥ ॥

ॐ ज्यौह्वरपात्राय पादकां ॥ ॥

द्वद्वी. सूत्रगणनमिता. काषि

[illegible]

स्त्राय पादकां॥ वैजपक्षप्रमास्त्राय
पादकां॥ ॐ ति आसन॥

अरुनपदान॥ प्राशसचहुर्मस
नपक्षमनु॥ अधान॥ वरु॥ धूपप
दावगनक॥ पूजन॥ कैरुं नन्यन्य
॥ खैवंमानन्यकलायनम॥ सैदं भू
माकलापादकां॥ धौयं मनिचै क
लापादकां॥ दैनैकालिन्यकलापा
दकां॥ चैधैवपादकां॥ चैदं सुख
स्त्रायकलापादकां॥ ऊं थं हागकला
पादकां॥ मं गं चिष्ठाकलापादकां
ऊं हां उायाकादिचूपिथास्त्राय
पादकां॥ टं टं पाविष्ठाकलापाद
कां॥ ॐ उं दमाकलापादकां॥ वं सु
यै म सुलाय द्वादहाकलात्मन
म॥ ॐ सुं सुं सुं सुं सुं पत्रमा मृदु
र्घपाजयनम॥ वैजकिसि २ वि
चकाकनायेक अस्तु यरुट्॥ अर्घ
पाशादकन प्रादक्ष॥ चहुसस्त्रान
॥ वैजनमारुगवनिश्चनसि विरुन

॥ अरुन नथा दन ॥ अरुन नादन
कवच वरुन ॥ ॐ नित्यं
स्नान ॥ दयानि नय ॥ वधू कनू चिना
नागान् शुगन्ध स्यादमादिता ॥ मंदय
पत्रमंदवी विद्धि सिद्धि प्रदायक ॥
पाशु प्रनय रुद्रा शुख धुमं रुतं
असुषन मानकं आपु विरुतं मंलापा
नं पियुषं चार्घ्यमानयतु ॥ व्रंज द्वा
पाशु पूलयतु ॥ मूं ॥ पाशु पवित्र
क कनू शस्त्रा ॥ ॐ पाशु साधन
हिकट मूडा ॥ ॥ पूजनं ॥ अर्घा
नासु मनुन ॥ नन मनुन ॥ हिकान
रुति ॥ मभ्य व्रं कानमा विदवतु ॥ अं
असु नाकला पादुकां ॥ अं मानका
कला पादुकां ॥ ॐ पूषा कला पादु
कां ॥ ॐ शुक्ल कला पादुकां ॥ उं पूषे
कला पादुकां ॥ उं नल्य कला पादुकां
॥ मं पूषे कला पादुकां ॥ मं धा निन्य
कला पादुकां ॥ उं वतिन्य कला पादु
कां ॥ उं काश कला पादुकां ॥ वं श

स्त्राकलापादकां॥ त्रैलोक्यकलापा
दकां॥ अं पृषाकलापादकां॥ अं पृ
थुमाकलापादकां॥ संसामधुलाय
षाठकलात्मन्यनमः॥ ॐ निषाठ
कला॥ ॥ अथ ॥ लाक्षावसनि
रादवी जवादाविमलागिनी। यो
वन्मनुनरूपाज्ञा। तिनजादिवारूणि
नी॥ मधुलानन्दचरम्पादकां॥ दक्षा
रुजधवनी। षड्भिक्षुववजश्चदि
क्षिमंमूकवन्तथा॥ गदापद्मवन्पा
ठं सवदरुसुविवाजिन। रुतकाकु
हाद्यक्षाश्च॥ खदागवन्धवन्धयानि
लात्पलरुयंविन्दुवामरुसुषूक्ष्म
वनी॥ दिव्यवत्सरुतागापदमारु
वनरूषिणा॥ स्वरूपपद्मासनादवी
वधपद्मापविस्त्रिगं॥ एवंरूपंमरु
दवीवावनीदिव्यरूपिनी॥ कमन
सिद्धिदंवेव क्रियासिद्धिसमनुवि
रु॥ संसयनमरुविश्राप्तायश्चिख्या
दिरुधन॥ मरुसात्तिकवलेव

महासम्यददायका॥ महासाक्षिक
बंनिसं महावाधिवृजापदा॥ एवं
सिद्धिकवीदवी प्राक्तपूजामहारुले
॥ ध्यानपूषांपादकां॥ ॐ नमो अर्धान॥
वदा॥ वसिष्ठि॥ बहुलसुसकाल॥
दादक्ष॥ ६४॥ षष्ठं॥ उवलकसरु॥
षष्ठकिनि॥ वैजं अन्नकुलाकरु
गगर्गमामिनि अन्नकुलाक अमृ
मसंचवनि अन्नकानन्ददवअन्न
काम्वा अन्नकलदकानिसिद्धि अन्न
कलदकानियागिनीपादकां॥ वैजं
मूं॥ मूं॥ महापाशुरुद्वानिकायपा
दकां॥ वैजं मूं॥ मूं॥ महा
पाशुरुद्वानिकाय
पादकां॥ श्रिया अश्लि॥ षष्ठं॥
॥ धनं वलि॥ आवाद्या॥ महासंखम
डा॥ महायानि॥ कायविन्दु नम
स्कावमडा॥ आप॥ मा॥ कायवि
यालिपूरु पवममृत्तमयं वकसिं
धूववर्धु उद्गाधुखसंमृगावद

तिअहिनिष्ठा शूष्मनायापदव्या॥
साष्टिष्टिष्टिवृषा सकनसूनगक्ष
काषयन्तिसदवी साहागदिव्यत
आमहिमतरुलेदा माद्वलक्ष्मीप्र
दाना॥ॐ तिपाठपूजा॥

मन्त्रादिष्टुद्धिपूजा॥ वैजवडपद्मास
 नायपादको॥ वैजमस्त्रास्त्रायपाद
 को॥ वैजपद्मासनपादको॥ ध्यान॥
 एकवकुलिनः॥ ३॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 रुडा॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 शक्तिदधुथा॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 सर्वयानीविविक्तय॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥
 ध्यानपूष्यपादको॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दिनं च न क व र्ण च रु द्र ऊ । स
 पद्म त व र्ध ष्च त्रि शूलं द धु म व
 च ॥ सुखा सुन ग ता क षू सर्व सुं प
 त्रि का र्त्ति तं । पत्र म म्ब गु वू प्रा कुं
 म ध्य म स्तु प रू ज य ता ॥ पत्र म गु वू
 ध्वा न पू ष्य पा दू कां ॥ ॥ व क व द्वा

जिनं जंच पातवर्षु च रुद्रं । उत्स
लंपरु कं (स्वेव वनद रुद्रं मधु
न॥ पद्मासनास्तिकावद्भाषिवना
स्तसंस्तितं । पद्ममस्तिकुनसम्यक्
सिद्धिदं सिद्धिदायकं ॥ पद्ममस्तिकु
नूष्मानपूर्य्यपादकां ॥ स्वगुनूष्मा
रुष्माक्षानन्दनाथदवपादकां ॥ वै
पद्ममगुनूष्मानन्दनाथदवपाद
कां ॥ वै पद्ममस्तिकुनूष्मा मिशान
न्दनाथदवपादकां ॥ वै श्री श्री
विशुद्धिरुद्राविकायपादकां ॥ श्री श्री
कां ॥ एव वलि ॥ आवाद्य ॥ श्री श्री
धनमदादर्शयन् ॥ जाप ॥ स्फुट ॥
ॐ तिमिषुद्धिपूजा ॥ ॥ श्री श्री
यरुद्र ॥ फनशाधन ॥ वै श्री श्री गु
ष्टास्यानमः ॥ वै श्री श्री रुद्रं स्थाप
॥ वै श्री श्री मधुमायवाषट् ॥ वै श्री श्री
नामिकायद् ॥ वै श्री श्री कनिस्तिका
यवषट् ॥ वै श्री श्री श्री यरुद्र ॥ वै श्री
द्रुं कवतलायनमः ॥ ॥ श्री श्री

यायनम॥ ४॥ ॐ हिनमस्तुता ॥ लं
हिषायवाषट् ॥ ॐ कवचाय हुं ॥
उं न उ उ या य वा षट् ॥ ॐ अस्त्राय
रुट् ॥ ॐ मित्राय ॥ ॥ कनाङ्गना
स ॥ वैश्वदेवि स्वास्तु न पादूकां ॥ वैश्व
संवि स्वास्तु न पादूकां ॥ वैश्वदेव लला
टस्तु न पादूकां ॥ वैश्वमंवक मधु
ल पादूकां ॥ वैश्वलैद्यय पादूकां ॥
वैश्ववैनाहो पादूकां ॥ वैश्ववैशुघ्न
पादूकां ॥ वैश्वयैजंघ पादूकां ॥ वैश्व
उपादद्ययथा पादूकां ॥ वैश्व ॐ अ
स्त्राय रुट् ॥ सर्वाङ्ग पादूकां ॥ ॐ मि
त्रवात्मान्यास ॥ ॥ नमो आत्मपू
जन ॥ अथावाष्टमकुं न ॥ प्रियाङ्गु
लि ॥ पूष्य हिनमस्तुता ॥ हिनपूज
नमस्तु ॥ वैश्वदेवां श्रीलकुलिशान
न्दनाथ पादूकां ॥ वैश्वदेवां श्री
रुगीमानन्द श्रीनाथ पादूकां
॥ वैश्वदेवां श्रीसवरुहानन्दनाथ पा
दूकां ॥ वैश्वदेवां श्रीमहाकालनन्द

नाथपादको॥ वैंश लै श्रीपिनाका
नन्दनाथपादको॥ वैंश वैंशीषधि
सानन्दनाथपादको॥ वैंश वैंशीरू
जगिसानन्दनाथपादको॥ वैंश
यैशीवाल्लिखानन्दनाथपादको॥
॥ वैंश उँशी अर्चिसानन्दनाथपाद
को॥ वैंश झाँ मृगी न्यासहठालिका
यपादको॥ ॐ मिआत्मपू
जा॥ ॥ तत्ता आसनत॥

वैंगपद्मास्त्रायपादकां॥ वैंग
 नासनायपादकां॥ वैंगपद्मास
 नक्षत्रं च दक्षकं किलाचनं
 खवर्षुचमदादिपिं सर्वलक्षण
 संयुक्तं। खवर्षुपूर्वकं दुदक्षि
 रुषूसाहितं॥ उरुवपितवर्षुस्या
 रुद्वर्षुवकवर्षुतं। वकस्यदक्षि
 क्षधूमक्षमरुवसवच॥ गद्व
 र्षुपीतवर्षुक्षपीतस्यारुषूदक्षि
 क्ष। वकमरुवमिषाद्वरुद्वर्षु
 क्षमरुम॥ अक्षदक्षरुउद्वर्षु

कवन्धनानरुषितं खड्गं न कथं
 वेवं शिष्टं न मङ्गलं तथा ॥ शूर्पक
 मधुल (शृष्टं) उ मवृत्तं द्वां द्वा मवच
 वानधनस्तसंयुक्तं उ नृद्यक्ष्म
 साहितं ॥ चक्र (श्वेव) गदापाणि
 वनदारुयदस्तुकां कायविन्द
 धवदव नानालंकावरुषित ॥
 शर्व ४ पीत रुवद्वर्ष मासनसुख
 संस्तुतं ॥ एवं रूपं नवात्मानं मधु
 लयुवमधुलं ॥ ध्याययुक्त ४ प्रयु
 कात्मा द्विप्रसिद्धि किमानव ४ ॥
 तिनवात्मा ध्यान विचिन्तयन् ॥ वेङ्ग
 म् ॥ म् ॥ नवात्मा शीतुवमधुल
 रुद्राविकाये पादकां प्र
 जयामि ॥ मधुलमधुध
 नपूष्यं धार्यन् ॥ मन्त्रमधुन ॥ ॥
 नमो पूजनं ॥ षष्ठं (द्वि) मूलं नवल
 ॥ वेङ्गं नमो मद्रा पूजा शीतुवमधुल
 शीतुविकाये पादकां ॥ शिकानम
 ध्या ॥ वेङ्गं नमो मद्रा पूजा शीतुवमधु

लक्ष्मीसक्येपादकां॥**पूर्व**॥ वैजं
उपनमस्युवमसुलक्ष्मीदद्याय
पादकां॥**दक्षिण**॥ वैजं॥ उपनम
सुवमसुलक्ष्मीरूपायपादकां॥
उत्तर॥ वैजं॥ अगुवमसुलक्ष्मी
आरूपायपादकां॥**पश्चिम**॥ वैजं
क्षिणसुवमसुलक्ष्मीपनायपादकां
॥**नेत्र**॥ वैजं॥ विद्यासुवमसुलक्ष्मी
पनायपादकां॥**वायु**॥ वैजं
क्ष्मीआसुवमसुलक्ष्मीपनायपादकां॥
ऋषभ॥ वैजं॥ आ
रूपायपादकां॥**अग्नेय**॥ वैजं
ऊयायपादकां॥**नेत्र**॥ वि
ऊयायपादकां॥**वायु**॥ वैजं॥ अ
जितायपादकां॥**ऋषभ**॥ वैजं॥ अ
पनाजितायपादकां॥**अग्नेय**॥ वैजं
रूपायपादकां॥**पूर्व**॥ वैजं॥ रूपायपादकां॥
दक्षिण॥ वैजं॥ रूपायपादकां॥
पश्चिम॥ वैजं॥ रूपायपादकां॥
उत्तर॥ वैजं॥ रूपायपादकां॥

रुन॥ वैं गलै निरुह य पादुकां॥ म
 ध॥ वैं ग श्रीकुलरु व वाय पादुकां॥
 दक्षिण॥ वैं ग श्रीकुल उं व नू रु व वा
 य पादुकां॥ पश्चिम॥ वैं ग श्रीकुल क
 पाल रु व वाय पादुकां॥ उरुन॥ वैं ग
 श्रीकुल आरु रु व वाय पादुकां॥
 मध्ववलि॥ वैं ग श्रीकुल आरु द वी पा
 दुकां॥ मध्ववलि॥ वैं ग दौं दौं दूंदू
 ४ दूंदू पालाय पादुकां॥ नेमव
 लि॥ वैं ग श्रीजौ कुल पूरु व रु क
 नाथाय पादुकां॥ वायववलि॥
 वैं ग श्रीगौ गौ गूंग ४ ग्लोक न ग ४
 धनाय पादुकां॥ ००५ नवलि॥ वैं
 ग श्रीमहाकोमाली विच पादुकां॥
 अग्रयवलि॥ वैं ग मध्ववलि ४॥
 वैं ग नमो गवती शुं कृदिकाथे
 दौं दौं दूंधा व अंधा वैं अंधा नाम
 खीछूं छूं किनिश्चिरे पादुकां॥ व
 लि॥ वैं ग नमो गवती शुं व किका
 येसूं सूं सूं रु मन म १ धा व अ

धावअधावामखाच्चौंछौकिनि२
विचपादकां॥**वलि॥** वैजनामारुग
वतिमिद्धसुसुकिकिफसुसु
सुखवगवैधावअधावअधा
वामखाच्चौंछौकिनि२विचपादकां
॥**वलि॥** वैजनाआनन्दहाकिरेन
वानन्दवीनाधुविफयसुपाद
कां॥**वैजना** आनन्दहाकि
रेनवानन्दवीनाधिफय
ग्रामहाविद्यावाद्यध्वनीकांपा
दकां॥**मध्वअधाव॥** वृजन॥
पूजन॥**मध्व॥** वायव्यवलि॥
वैजप्रथमवतिसिं॥**मध्व॥** हान॥
वलि॥ समस्तमरुपा०सिंहासन
पा०पी०प्रपा०द्विषापद्विषं
दहापसंदाहदिव्यसिद्धिसमय
चक्रपादकां॥**मध्वआश्रयवलि॥**
उक्तानूकंयल्लिखितसर्वश्रु
दयायपादकां॥**मध्ववलि॥** वैजना
ददयादिसंपूज॥**आवाहनादि**

चन्दनाक्षतपूष्यः ॥ धनमूडा
वैजम्बो नवात्मारुहाविकाय ००
दंनेवम् ॥ अंवलिंगृद्रा २ स्वाहा ॥
जाप ॥ ॐ स्वाहा ॥ स्फाज्जिद्व
॥ जिह्मि ॥ शुभमशुल ॥ वैजम्बु
मशुलमदंदवं रुचवं धीनवालि
कंसर्वपाप रुचंदवं सर्वसिद्धिप्र
दायकं शुभमशुलमदं पुरुषयप ॥
स्तनजायहि मसिद्धिराजनानिर्यं
स पूजितं ॥ ॐ निपश्चिम
अष्टास्त्राय शुभमशुल दवाचनस
माफं शुभमशुलमदं पुरुषयप ॥
सु ॥ ॥ ॥ अथ कर्मार्चनं ॥ ॥

ग्राहववावाच ॥ अष्टाविंशतिमदं
कर्मदं पश्चिमार्चनं त्वया प्रा
थितानिर्यं शुभमदवीस्मरुषितं ॥ शु
चिस्तानं शुभमदं शुभमदं शुभमदं
पूजनं शुभमदं शुभमदं शुभमदं
चनजिकालयत् ॥ तमावकाक्षत् ॥
॥ मध्वति ॥ शुभमदं शुभमदं शुभमदं

शृंग वाह पतयू सस्तु नतु वाह
 मस्तुष्टु (३) कमथवदि षाउसाव
 द्वितियः । आधनद्वानयू (५) म. वाप
 नवतयू न. द्वावमनस्मधन. सायं
 धाकर्मचक्रं विविधिरुलपदं पा
 रुपाधीकृज्ज् (६) ॥ अथातसंप्रवक्षा
 मि. कर्माचनं समालयतु । षउं
 ददयादिश्च वतिसिन्नासकाव
 यतु ग्रं० न्यासकथाधायं द्वादसा
 ऋषउंगकं मालसिद्धनामिष्ट
 षट्दत्तिलपश्चकं ॥ नवात्मानवधा
 नास्तं धाधा (७) वतिविषया । धाना
 षकं निखलु (८) ॥ एकादशविविउप
 ॥ ७॥ किषक ॥ न्यासाद्यं धाठान्या
 समुदाहृत. एतेन्यासचिनादवीन
 द्विकर्माचनरुवतु ॥

कमलाचकुलदीपा २ वर्चला ३
 वद्वरूपिका ४ ॥ मरुकाविका ५
 काकिनाख्या ६ कवानाशयकिथं
 उपतु ॥ प्रथमं न्यासषउं ॥

तत आसनादि न्यासं कालय ॥
 वैं अंजो डो डूँ डै डौं डः वज्र मधुल
 वज्र क्षी अमा धमरा घान गगन वि
 लुब्ध (६॥ धय २ दूँ दूँ दूँ दूँ वज्रासन
 दूँ पाद को ॥ मा आसन ॥ वैं अं दूँ दूँ
 मारु उ मधुल साधनी रुं रुं विनी दूँ
 रुं दूँ ॥ सूर्या अर्घ ॥ तत मूल प
 उद न्यास ॥ ॐ दं वलिंदयात ॥ ॥
 तत वकिणी न्यास ॥ वलि ॥ वैं अ न
 वलिका कल ॥ चमपाल ॥ वैं अ
 मां हिनं ध पाद को ॥ चमपाल कल
 न ॥ वैं अ हं ल लाट पाद को ॥ कपा
 ल ॥ वैं अ गै द क्षि न न रु पाद को ॥
 ऊव मिखा ॥ वैं अ वं वा मन रु पाद
 को ॥ खव मिखा ॥ वैं अ त्रिं नासिका
 य पाद को ॥ द्वास ॥ वैं अ दूँ मू
 ख पाद को ॥ खाल ॥ वैं अ कूँ दं क्षि
 न कक्ष पाद को ॥ ऊव द्वास पात ॥
 वैं अ दूँ वाम कर्ण पाद को ॥ खव
 द्वास पात ॥ वैं अ कौं चि वू की पाद को

मन॥ वैंशयेंकरुपादूकां॥ कथू॥
वैंशजौददयपादूकां॥ नूगनस॥
वैंशजौदद्विनसुनापादूकां॥ जव
दू॥ वैंशजौवामसुनापादूकां॥ ख
वदू॥ वैंशधादद्विनकषनापादू
कां॥ जवयाक्का॥ वैंशवैवामकष
नापादूकां॥ खवयाक्का॥ वैंशअना
सोपादूकां॥ गदू॥ वैंशधौलिंग
मूलपादूकां॥ लिंगस॥ वैंशजैंग
धुयापादूकां॥ जवकासि॥ वैंशजै
रुषुपादूकां॥ खवकासि॥ वैंश
जैंगधुयापादूकां॥ मारु॥ वैंश
धौदद्विनजानापादूकां॥ जवपू
॥ वैंशनौवामजानापादूकां॥ ख
वपू॥ वैंशमूदद्विनपादपादू
कां॥ जवपालि॥ वैंशखिवामपाद
पादूकां॥ खवपा॥ वैंशहौचान
दुपपादूकां॥ मित्रिखा॥ वैंशहौद
द्विनसुखपादूकां॥ जववाहा॥
वैंशकिंवासुखपादूकां॥ खववा

॥ वैं अहिंदादिष पाश्वपादूकां ॥
ऊववक्का ॥ वैं अकिं वाम पाश्वपादू
कां ॥ खववक्का ॥ वैं अहिंनिकलिना
पादूकां ॥ मिह ॥ वैं अविकाउं कं पा
दूकां ॥ चसपान ॥ वैं अचै पादास्क
श्वपादूकां ॥ पात ७का ॥ ॐ तिव मि
सिन्यासरुहालिकायवलिंगुद्र २
स्वाद ॥ ॐ तिव मिहीन्यास ॥ ॥
हं अथ गन्धिन्यास ॥ ॥ वैं अहं
अननुग्रन्धिपादद्वयपादूकां ॥ पा
७तनिपा ॥ वैं अजां कालग्रन्धिगु
रुद्वयपादूकां ॥ गुथिनिपा ॥ वैं अ
जां वृद्धग्रन्धिजघ्नाद्वयपादूकां ॥
कुं कुं निपा ॥ वैं अजां अक्षग्रन्धिउ
ल्लूद्वयपादूकां ॥ पू ७निपा ॥ वैं अ
हं वामग्रन्धिकटिद्वयपादूकां ॥
कनचूकनिपा ॥ वैं अहं कामग्रन्धि
लिंगस्याग्रपादूकां ॥ लिंगस ॥ वैं अ
हं पिशुग्रन्धिमधस्कनपादूकां ॥ ना
रिंकास ॥ वैं अहं बुद्धग्रन्धिवस्त्रास्क

नपादकां॥ **नाहिया अंतलस॥** वैं ५
है स्याग्रन्दि नारुपादकां॥ **नाहि**
स॥ वैं ५ है सामग्रन्दि नारुपादकां
॥ **नाहिन थं॥** वैं ५ है प्रानग्रन्दि उ
दवपादकां॥ **थतस॥** वैं ५ है जीव
ग्रन्दि दयपादकां॥ **नगनस॥**
वैं ५ है विष्णुग्रन्दि कंथपादकां॥
कथस॥ वैं ५ है ब्रह्मग्रन्दि तलसू
लपादकां॥ **थकस॥** वैं ५ है ॐ श्वन
ग्रन्दि सिनसिपादकां॥ **मालस॥**
वैं ५ है सदाशिवग्रन्दि मृद्विस्तु न
पादकां॥ **वसपालस॥** सदादलव
धपातकनासरुल॥ **ॐ तिग्रन्दिन्या**
स॥ वैं ५ नमः १ स्कृन्वडवृपद्रु
अस्तायरुद्र॥ वैं ५ अधावकीं अ
हुष्टासोपादकां॥ वैं ५ थवधा की
तर्कनीपादकां॥ वैं ५ धावधावत
वद्रुमध्वमायपादकां॥ वैं ५ सर्वत
१ सर्वसर्वज्ञ अनामिकायपादकां
॥ वैं ५ है १ ४ कोकनिष्ठायपादकां॥

वैंज नमः स्तुतु वृषजः कवत
नपादकां॥ **अनन अंग न्यास॥** वैंज
अधार्न हौं हृदयाय नमः॥ वैंज थ
धार्न हौं शिव संस्कारा॥ वैंज धार्न धा
नत न हौं शिखाये वोषट्॥ वैंज सर्व
तः सर्व सर्वैक कवचाय हौं॥ वैंज शं
सः को न रुद्र याय वाषट्॥ वैंज नम
स्तुतु वृषजः अस्त्राय रुट्॥ एवं
वलि॥ **ॐ नमो अ धार्न न्यास॥**

अथ द्वादश क्रियाः॥ वैंज स्तुतिर्जा
यपाद द्वयपादकां॥ **पाठनपा॥**
वैंज स्तुतिर्जायाये जानु द्वयपादकां॥
पुलिनपा॥ वैंज विद्युताये उल्लू द्वय
पादकां॥ **प्रातः॥** वैंज स्तुतिर्लक्ष्मीयु
ष्मपादकां॥ **गुप्ता॥** वैंज स्तुतिर्दिफा
ये नारोपादकां॥ **नाहि॥** वैंज स्तुतिर्मा
लिनी हृदयपादकां॥ **नृगलस॥**
वैंज स्तुतिर्शिषाये कलषपादकां॥ **क**
थस॥ वैंज स्तुतिर्वसु मुखाय मुखपा
दकां॥ **खाल॥** वैंज स्तुतिर्नासाम्बुमा

येनासापूतद्वयपादकां॥**क्रास॥**
वैजकटकायेकर्षुद्वयपादकां॥
क्रासचतनपा॥ वैजसूद्विकक्षये
हृदपादकां॥**मिखा॥** वैजसूद्विसू
नसूद्विसिपादकां॥**सिन॥००**
मिदादक्षान्यास॥ वद्वद्विदि
पापनासूद्वि॥ ॥ वैजसूद्विसर्व
हृतायेद्वद्वययनम॥**द्वद्वय॥**
वैजसूद्विअमृद्विजामालिनीहृद्वे
द्विद्विसूद्वि॥**सिन॥** वैजसूद्विअव
द्वद्विद्विअनादिवाधिनिद्विखा
येवाषट्॥**द्विखा॥** वैजसूद्विवद्विनी
वद्विधवायेहृमल्लकववायद्वि॥
कवत्त॥ वैजसूद्विनावानिहृअनू
फद्विकिहृद्विअजसाम्बिहृजिन
द्विअपनज्जयायवाषट्॥**अज॥**
वैजसूद्विअनमल्लसुअनद्विकि॥**द्वि**
लीद्विमल्लपापुपमाकायहृद्वि
कायद्विअमृकायहृद्वि॥**अववलि॥**
००मिखउअन्यास॥ ग्वपिहृद्वि

[illegible]

द्वयपादकां॥**क्रासचालनियु॥** वैश्र
ववजल्लेवकुपादकां॥**खालस॥**
वैश्रकंकटायेंदशद्वयपादकां॥
वास॥ वैश्रखैकालिकायेडुड्ददक्ष
नपकोपादकां॥**थंथूवा॥** वैश्रगं
क्षिप्रयेअधदक्षपकोपादकां॥**का**
थूवा॥ वैश्रघैद्यावायेडुड्दोष्ठ पा
दकां॥**थंथूसि॥** वैश्रदंविनायेअ
ड्दोष्ठपादकां॥**कथूसि॥** वैश्र००मा
यायेदद्यैकिक्कायांपादकां॥**मस॥**
वैश्रअंवागश्वनीवावायापादकां
॥**मयावास॥** वैश्रवैक्षिखिवाहल्ले
कल्लपादकां॥**कथूस॥** वैश्ररुंही
षल्लेदक्षिनवाहल्लिखुवपादकां
॥**जववाहान॥** वैश्रयैवगभयवाम
वाहल्लिखुवपादकां॥**खववाहान**
॥**वैश्र००मालायेदक्षिणवामवाह**
दल्लुवकदपादकां॥ **जवजवस॥**
वैश्रटविनायकायेवामवाहद
ल्लुपादकां॥**खवजवस॥** वैश्र००पू

धुमायेकवतवद्वयपादकां॥**ला**
लातनिपा॥ वैं ग म म कानि १॥**धे** द
क्षिणकलाकुलापादकां॥**उवप**
६॥ वैं ग ऋ क ई नो वामकलाकुलो
पादकां॥**खवप**
६॥ वैं ग वं दि
पिनो मूलदधुक्षिणरुक्मपादकां
॥**प**
६॥ वैं ग ऊ ऊ य नो दक्षिण
रुक्मपादकां॥**उववा**
६॥ वैं
ग टं क पालि नो क पाल वाम रुक्म
पादकां॥**खववा**
६॥ वैं ग पं पा
वनो ददि म १॥**ख**
६॥ वैं ग रुं अ म्बिका ये प्रा ण धा वं पाद
कां॥**द**
६॥ वैं ग सं सर्वा न्म नं द
क्षि पा १॥ पादकां॥**उव**
६॥ वैं
गं अं १॥ क स क्ते वाम पा १॥ पाद
कां॥**ख**
६॥ वैं ग कं क ग लो द
क्षि ण मु न पादकां॥**उव**
६॥ वैं ग
लं पू र्ण ना ये वाम रु न पादकां॥
ख
६॥ वैं ग आं आ मा ये प य द
य पादकां॥**द**
६॥ वैं ग षं ल वा

दशैवाद्दद न पादकां॥ **प्रातः॥** वै
जदं सहा विस्तेनाहिम (क्ष) पादकां
॥ **रुद्र॥** वैजमं महाका लो नितम्भ
पादकां॥ **स्वरूनका॥** वैजसं कृष्ण
यूक्षये शुभ्रपादकां॥ **गुच॥** वैज
जं शुकादये शुक्रपादकां॥ **गुच
नका॥** वैजतं तानादये उन्नयये पा
दकां॥ **वसुधा॥** वैज वं हानाये द
क्षिण जानूनि पादकां॥ **जवपू७॥**
वैज वैक्रियाये वाम जानूनि पाद
कां॥ **खवपू८॥** वैज उं गायये दक्षि
ष ऊं ध पादकां॥ **जवचू९॥** वैज उं
सा विस्ते वाम ऊं ध पादकां॥ **खवचू
१०॥** वैज दं द ह नो दक्षि ष पाद पा
दकां॥ **जवपानि॥** वैज दं द कानि
स्ते वाम पाद पादकां॥ **खवपा ११॥**
वैज द्यौं ह दयाय नमः॥ वैज द्यौं
क्षि नमस्वाहा॥ वैज द्यौं णि स्वाय वा
षट्॥ वैज द्यौं क ववाय दूं॥ वैज द्यौं
नमः यवाय वाषट्॥ वैज द्यौं अस्त्राय

यथावद्विस्तृतं ॥ ५ ॥ ककारः अनिदं हन ॥
नथासर्वानि पायानि नालनीदं हन ककारः ॥ ६ ॥

रुट् ॥ १ ॥ मालनीन्यासरुट्
काय ०० ॥ २ ॥ देवलिंगद्रुट्
॥ नमस्तु न देवलिंगद्रुट् ॥ ०० ॥ तिम
वनीन्यास ॥ १ ॥ गुरुत्वादिपापनास
रुल ॥ ॥ गुरुत्वादिनासिन्यास ॥
वैश्रवण्यवटपादकां ॥ कपाल
स ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥ कपाल
कां ॥ खालस ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥
धनंशुपादकां ॥ १ ॥ खालस ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥
०० ॥ तिम ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥
खालस ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥
नेक ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥
वैश्रवण्यवटपादकां ॥ १ ॥ खालस ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥
॥ खालस ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥
दक्षिणनासापूरुपादकां ॥ १ ॥ खालस ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥
॥ खालस ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥
नासापूरुपादकां ॥ १ ॥ खालस ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥
वैश्रवण्यवटपादकां ॥ १ ॥ खालस ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥
कां ॥ १ ॥ खालस ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥
मग ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥ १ ॥ खालस ॥ वैश्रवण्यवटपादकां ॥

[illegible]

वामहस्तमसिवन्धपादकां॥ खन
 वृत्त्या॥ वैश्रमंशुश्रीवामपाक्षपा
 दकां॥ खननादात॥ वैश्रश्रीश्रीमक्ष
 वामहस्तकलाङ्गलापादकां॥ ख
 नपञ्चद॥ वैश्रट्टसामश्वनदक्षिण
 हिर्ध्वपादकां॥ जवजन्द॥ वैश्र०लां
 मुलिषादक्षिणोवृवाटपादकां॥
 जवखन॥ वैश्रउदावृकदक्षिणज
 नूनिपादकां॥ जवपूनि॥ वैश्रट्टश्र
 दंतानीषादक्षिणजंघायपादकां॥
 जवकुक्कु॥ वैश्रश्रीउमाकामदक्षि
 णपादपादकां॥ जवपावि॥ वैश्रक
 आषाटीषावामहिर्ध्वपादकां॥ ख
 नजं॥ वैश्रथदलीषावामावृवाक
 पादकां॥ खनखन॥ वैश्रदधश्रीषा
 वामजानूनिपादकां॥ खनप०॥ वै
 श्रधमीनवामजघायांपादकां॥
 खनकुक्कु॥ वैशनमषवामपादपा
 दकां॥ खनपा०॥ वैश्रपलाहितद
 क्षिणपाक्षोपादकां॥ जवजव॥ वैश्र

हं धिखं वा मपाख्ये पादको॥ ख
 वज्र॥ वैजवज्रगलपुष्टवं ध
 पादको॥ उदध॥ वैजरुद्धि ननुना
 हिमध्वपादको॥ रुद्र॥ वैजमहा
 कालद्वीपध्वपादको॥ नृगल॥
 वैजबालिहस्तध्वपादको॥ लिं
 गयाश्रुग॥ वैजवरुज्ज्वनक पा
 दको॥ लिंगमूल॥ वैजलपिनाकी
 धामां पादको॥ नाहियाई॥ वैज
 वखजानन्दस्नायूमध्वपादको॥
 क०॥ वैजधधवकानन्दश्रुति
 निमध्वपादको॥ ग०॥ वैज
 षडितानन्दमञ्जायापादको॥ शु
 र०॥ वैजसरुगुष्टकपादको॥ अ
 र्ध॥ वैजरुलंगली धाधध्वन
 पादको॥ अ०॥ वैजद० सर्वशका
 धपादाहुष्टदयग्रन्थिमध्वपादको
 ॥ प०॥ निगुदि॥ वैजश्रुद्धया
 यनम०॥ वैजश्रुद्धिनसस्त्रा॥
 वैजश्रुद्धिषायवाषट्॥ वैजश्रुद्धि

वचायदं ॥ वैजयं न उ उ या य वा
षट् ॥ वैजयं अक्षयं रुट् ॥ वैजयं
सदनादिहं व व अक्षानि पञ्च ॥
वर्धुयनम ॥ पूजनं ॥ प्रवं वलि ॥

ॐ तिसदनामिन्यास षडंगकृत ॥

तिविदथ्मादिसर्वपापनासकल

॥ ॥ वैजयं कालिकालिमहाकालि

मासं धितरुं अतिनिद्रां द्रुं न

कुरुषुमखिदविमामां पञ्च नु

द्रुव ॥ श्री हृदय इति श्री हृदय

पादको ॥ हृदयस ॥ ॥ वैजयं नमा

रुगवती इष्टवा अलि नूधिवमा

नरुहसिकपालखटाक्षवि

सिह न २ दह २ पच २ धम २ म

महाकुन्ग्रस २ मानय २ दं ३

रुट् श्री शिवा इति सिवसिपाद

को ॥ वैजयं दं दं दं श्री सिखाद

मिहिखायां पादको ॥ सिखा ॥ वैजयं

उरुलि आदिमदि आं सर्वपूरु

मिहाम्बदि आदिसिआदि उल

रि. आ. सर्व. दृष्ट. हे. ल. दि. आ. श्री. क.
व. व. इ. ति. क. व. व. पा. द. कां. ॥ **क. व. व.** ॥
वै. ज. व. क. व. क. म. द. न. क. चा. म. ल. लु.
ध. लि. अ. व. न. व. २. स्वा. द. श्री. न. उ.
इ. ति. न. उ. पा. द. कां. ॥ **न. उ.** ॥ वै. ज. गु.
प्र. क. डि. क. क. रू. रू. म. म. सर्वा. प्र. द.
वा. न. य. न. म. न. न. न. न. च. लु. प्र. या. ग.
दि. का. न. य. न. च. न. न. का. न. यि. ना. न.
क. वि. ष्य. नि. ना. न. सर्वा. न. द. न. २. ड.
डा. क. री. लि. रू. रू. रू. रू. गु. प्र. क. डि.
क. श्री. अ. रू. इ. ति. अ. रू. पा. द. कां. ॥ **४.**
॥ **अ. रू.** ॥ स्वा. द. का. श. धि. व. सि. उ. म. न.
॥ **ॐ. दे. व. लि.** ॥ **ॐ. नि. ष. दृ. इ. ति. ना. म.**
॥ **म. रु. ना. म. रु. ल.** ॥ **॥ न. ना. न.**
ल. प. च. र. क. न्या. म. ॥ वै. ज. वा. ग. धृ. नी.
गुं. ल. ल. ग. ग. ध. ला. क. रू. ग. ग. रू. ग.
मि. नी. ग. ग. न. ला. क. अ. मृ. न. सं. वा. वि.
सि. ग. ग. म. न. न. द. द. व. ग. ग. ना. म्वा. च.
रु. ४. ष. षि. ल. द. का. टि. सि. इ. च. रु. ष.
षि. ल. द. का. टि. या. मि. नी. पा. द. कां. ॥

मूडि॥ वैजमायायस्तु नत्न स्वर्गला
करुगगर्गुगमिनी स्वर्गलाकअ
मुरुसंवाविषीस्वर्गनन्ददव
स्वर्गम्बावकिधलदकाठिसिद्धि
वतिसलदकाठियागिनीपादकां

॥ललाह॥ २॥ वैजमादनीस्तु न
त्नपवनलाकरुगगर्गुगमिनी
पवनलाकअमुरुसंवाविषिप
वनानन्ददवपवनाम्बाधादध
लदकाठिसिद्धिधादधलदका
ठियागिनीपादकां॥ **ददय॥** वैज

स्नानायेस्तु नत्नमरुलाकरुग
गर्गुगमिनीमरुलाकअमुरु
संवाविषीमरुनन्ददवमरु
मरुम्बाअलदकाठिसिद्धिअ
लदकाठियागिनीपादकां॥

नाहो॥ वैजङ्गागयविस्तु नत्नना
गलाकरुगगर्गुगमिनीनागला
कअमुरुसंवाविनीनागनन्द
दवनागम्बावत्वानिलदकाठि

सिद्धचविलक्षकाटियागिनीपा
दकां॥**गुह्य**॥ वैशङ्कोर्ज्ञानलब्ध
नीलअननलोकहागगर्भगमि
नीअननलोकअमृतसंचानिषा
अननानन्ददवअननकाम्बाअन
कलक्षकाटिसिद्धअननकलक्षका
टियागिनीपादकां॥**प्रवंचलि**॥
ॐ नित्यमिदमपश्यन्कन्यास॥स्व
र्गसंपादकुरु॥ ॥**कनानवा**
त्मा॥**कत**४पूर्वार्कप्रकाशनधवा
त्मान्यासंकात्रयत्॥**कता**धावास्तु
कन्यास॥**वैशङ्कोर्ज्ञान**४प्रस्तु
तश्चदयायनम४॥**हृदय**॥**वैशङ्को**
धाव२तनननू२रूपचत२क्षिप
तस्त्राहा॥**क्षिप**॥**वैशङ्को**चत२प्रच
ट२क्षिखायवाषट्॥**क्षिखा**॥**वैशङ्को**
कद२चम२कवचायदू॥**कव**
च॥**वैशङ्को**दम२घातय२विघातय
२नउजयायवाषट्॥**नउ**॥**वैशङ्को**
विप्रि२दू२रुद्रअस्त्रायरुद्र॥**अ**

ॐ ति अ धा वा सू क न्या स ॥ अ
न न व लि ॥ ॥ वैं ज झी ना सा
पू र द य पा द कां ॥ वैं ज झी मू ख
पा द कां ॥ ख वा न स ॥ वैं ज यै न उ उ
या य पा द कां ॥ मि ख वा स ॥ वैं ज स ४
स र्वा त्म नि पा द कां ॥ ॥ वैं ज अ
४ पा द द य पा द कां ॥ रु मि स ॥ ॐ दं
व लि ॥ ॐ ति ए का द वी न्या स ॥ ॥
वैं ज शिव त त्वा धि का व क्षो प ना य
शि व सि पा द कां ॥ शि व स ॥ वैं ज अ
धा व झो प व म धा व दू धा व नू प
५ ४ धा वा मू खि ती म ती ष शि व म
२ पि व २ नू नू २ व न रू ट स्को दू
रू ट वि श्या त त्वा धि का व प ना प
ना य द द य पा द कां ॥ द द य ॥ वैं ज
आ त्म त त्वा धि का व झो दू दू दू दू
रू अ प ना यै गु दू स्त न पा द कां ॥
गु दू स ॥ ॐ ति त्रि वि धा न्या स ॥ ए वं
व लि ॥ वैं ज झी नै अ अ धा व झो झी
अ धा वा यै शि व शि पा द कां ॥ भा द

वैंजङ्गानुरुहं स्तोत्रं होमायै दक्षिणरूपं पादुकां ॥ जवजं दं ॥ ३

स॥ वैंजङ्गावृषवमघानरुंक्षं प
त्रमघानामुखस्तुनपादुकां ॥ **स**
खस॥ वैंजङ्गानघानवृषरुंक्षो
घानवृषाये हृदयपादुकां ॥ **नृग**
वस॥ वैंजङ्गानघानामुखिस्तुघा
नामुखेनारुपादुकां ॥ **नरुस॥** वैंज
ङ्गाङ्गुलिषलिहोषनाये वामरुंक्ष
पादुकां ॥ **खवजदं** ॥ वैंजङ्गाङ्गु
र्मक्षो वामनाये दक्षिणवृषाद
पादुकां ॥ **जवजुति॥** वैंजङ्गिहृदपि
वरुस्तुपिवनाये वामवृषादपादु
कां ॥ **खवजुति॥** एवं वलि ॥ **ॐ तिघा**
लिकान्यास॥ ॥ वैंजनमारु
गवतिवृडाये रुंपादाङ्गुलया ३ ॥
वैंजनमचामुख्यैपादकवया
पादुकां ॥ वैंजनमश्वाकासम्भारु
क्षं रुंपाददयापादुकां ॥ वैंजन
मः सर्वकामार्थसाधकानां रुंयु
लुदयापादुकां ॥ वैंजमृजलाम
नीनां रुंजं यथापादुकां ॥ वैंजसर्व

उपतिरु गतीना रुं अन्वा पादुकां
 ॥ वैजस्व रूप पवनम रूप पनी वरु
 नीनां रुं उवा पादुकां ॥ वैजस्व स
 त्ववक्षा कवक्षा रुं दना न्मूल न
 समस्त कर्मा ना रुं जानो पादुकां
 ॥ वैजस्व माह गुप्ता दय पवनम
 सिद्धि रुं ना रुं पादुकां ॥ वैज पवनम
 कर्म रुं दन कव स सिद्धि कव रुं
 गुप्ता पादुकां ॥ वैज माह नां वचन
 रुं रुं लिं ग पादुकां ॥ वैज वृद्ध र
 रुं रुं वलिं ॥ ॐ न्ति वृद्ध र ॥ ॥
 वैज सुधा न्म मा ध विमल रुं व
 रुं यक्षा विरु पादुकां ॥ रुं दि ॥ वैज
 रुं रुं मा रुं रुं रुं विरु पादुकां ॥
 रुं रुं ॥ वैज रुं को मा रुं विरु पादु
 रुं रुं ॥ रुं रुं ॥ वैज रुं रुं रुं रुं विरु पा
 रुं रुं ॥ रुं रुं ॥ वैज रुं रुं रुं रुं विरु
 रुं रुं ॥ रुं रुं ॥ वैज रुं रुं रुं रुं विरु
 रुं रुं ॥ रुं रुं ॥ वैज रुं रुं रुं रुं विरु
 रुं रुं ॥ रुं रुं ॥ वैज रुं रुं रुं रुं विरु
 रुं रुं ॥ रुं रुं ॥ वैज रुं रुं रुं रुं विरु

न॥ वैंज हाँमहालक्ष्मीविश्वपादकां
 ॥ शिवसि॥ एवं वलि॥ ॥ इति माहुरव
 ॥ ॥ वैंजनमश्मम॥ ॥ इलला
 नपादकां॥ ललातस॥ वैंज दुर्द्धक
 हिदं क॥ हापादकां॥ ॥ वैंज कलि
 तहिखं रुं हिखायां पादकां॥ ॥
 वैंज विद्युक्तिं रुं किकायां पादकां
 ॥ वैंज तालकादि रुं नरुदय पा
 दकां॥ वैंज पिङ्गलरुव रुं रुं विपा
 दकां॥ वैंज विरुतडं रुं रुं डड्यायां
 पादकां॥ वैंज कुडं २ रुं डाष्टया ४
 पादकां॥ वैंज मांससावितरु
 लावसाप्रिय रुं वसनायां पाद
 कां॥ वैंज रुस २ रुं तावूम॥ ॥ पा
 दकां॥ वैंज नृत्य २ रुं वादुदय
 पादकां॥ वैंज विद्यं रु २ रुं क॥
 ग्रन्थिनिपादकां॥ वैंज माया न
 लाक्षरूपसरुमुपनिवरुनीनां
 रुं क॥ ॥ कृपपादकां॥ ॥ कथूनका
 ॥ वैंजनद २ रुं रुदिम॥ ॥ पादकां

॥ नूगल ॥ वैं अङ्गुल २ रुं नासो पाद
को ॥ नाहिस ॥ वैं अत्रिनि २ रुं निम
न्निपादको ॥ घातस ॥ वैं अहिनि २
रुं कात्या पादको ॥ वस ॥ वैं अहिनि
२ रुं लिङ्ग पादको ॥ लिङ्गस ॥ वैं अ
क्षिन्द २ रुं गुप्ता पादको ॥ मार्गस ॥
वैं अशमनि २ रुं दक्षिण वृपाद
को ॥ ऊववका ॥ वैं अशमनि २ रुं
वामाशो पादको ॥ खववका ॥ वैं अ
विडावनि २ रुं उपरुन दया ४
पादको ॥ ॥ वैं अशरुहि २ रुं
दक्षिण जानू पादको ॥ ऊवपू७
॥ वैं अशमनि २ रुं वाम जानू नि
पादको ॥ खवपू७ ॥ वैं असंजीव
नी २ रुं दक्षिण जंघायां पादको ॥
ऊवचूचू ॥ वैं अरुनि २ रुं वाम जं
घायां पादको ॥ खवचूचू ॥ वैं अ
रुनि २ रुं दक्षिण गुल्फ पादको ॥
ऊवगुठि ॥ वैं अशूनि २ रुं वाम गुल्फ
पादको ॥ खवगुठि ॥ वैं अशूलिल

२ हं दक्षिण पाद पादुकां ॥ **ऊव पा**
०॥ वै जन मा मा हृष्टं २ हं वाम पा
द पादुकां ॥ **खव पा ०॥** वै ज वाम
धुवलदविर्च हं पाद दुष्ट या ४
पादुकां ॥ **ऊव खव ०॥** न न व
लि ॥ ॐ मि मा ह ख धु न्या स ह द्वा वि
कार्य वलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥

वै ज अललाग पादुकां ॥ **ललाट ॥**
वै ज ॐ क ७४ पादुकां ॥ **कथू स ॥** वै ज
उं म ख पादुकां ॥ **मख ॥** वै ज व गुह
पादुकां ॥ **लिंहा ॥** वै ज अ पाद दया
पादुकां ॥ **पा ० न पा ॥** ॐ मि वी रूप
अ क न्या स ह द्वा वि कार्य वलि गृह्ण
२ स्वाहा ॥ ॥ वै ज हं हं हं म हं
नानि कार्ये ओं हं कला धि सां सी सं
सौ वि धु इ सा कि नो प रु हि पू वि
इ ख द्धि धन नन्द द व पादुकां ॥

क ७४ ॥ वै ज धा व अ धा व अ धा ना
मूखी व दू नू पा ये डे मूं म न्ना धि
कौं कौं कौं मूं अ ना द न का कि नो गु

पद्मपातालेहृदयकायवालिहृ

द्रा २ स्वाहा ॥ ॐ तिदा दी षट् न्यास
समाप्त ॥ ॐ तिषा धन्यास ॥ ॥
अथ कलस कुरु पात्र पूजा ॥ ॥
अथ नलि दिग पूजा ॥ तत्ता युत्रूप कि
पूजा ॥ वैजमल कालाय पादुकां ॥
॥ वैजदां दी दंड ४ दण्ड पा लाय पा
दुकां ॥ वैजपद्मा लाय पादुकां ॥ ॥
न ॥ वैजलवर्षा दिग्जा ध्व द
दिग्जा यमाविकां ॥ वामरुक्
हिक्ता पात्रं कचकी पविधानक्ष ॥
क्षितरुप विरुष ३ दृष्टा क्रि त
चर्म मेव च ॥ पद्मासन स्त्रि तं दे
व वद दधुधन तथा ॥ सर्वरुप
तिमर्चन कि तां नो मि गगल ध्वनं
॥ ॥ ध्यान पूषा पादुकां ॥ तत्त ४ पूजनं ॥
वैजगगल नन्द दव अम्बिका म्बा
दवा रुद्र अहदा सा स्वयं पादु
कां ॥ वैज श्रीगर्भ मूकानन्द दव ह
गाम्बामलानाम्बा देवी चारु ले अ
हदा सा स्वयं पादुकां ॥ वैज श्रीक्री

अनन्ददेवसमलाम्बादेवीवा
कुलअहलासास्वयंपादकां॥
ॐ श्रीसाक्षानन्ददेववाकुलअ
हलासास्वयंपादकां॥ ॐ श्रीआ
नन्ददेववाकुलअहलासास्वयं
पादकां॥ ॐ श्रीसरुजानन्ददेववा
कुलअहलासास्वयंपादकां॥ ॐ श्री
टीकानन्ददेववाकुलअहलासा
स्वयंपादकां॥ ॐ श्रीधनमानन्ददे
ववाकुलअहलासास्वयंपादकां
॥ ॐ श्रीदेवानन्ददेववाकुलअ
हलासास्वयंपादकां॥ ॐ श्रीपव
मानन्ददेववाकुलअहलासास्व
यंपादकां॥ ॐ श्रीजवजानन्ददेव
वाकुलअहलासास्वयंपादकां
॥ ॐ श्रीअप्रमानन्ददेववाकुल
अहलासास्वयंपादकां॥ ॐ श्री
श्रीगुर्वपकिरुहावकायपादकां॥
ॐ श्रीवलि॥ आवाहनादि॥
धनमूडा॥ आप॥ श्रीस्वाहा॥

स्तोत्र ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥

धनमाह निरुप ॥ तत्तात्तुषधीपू

जनं ॥ वैष्णवपद्मास्त्राय पादकां ॥

ध्यान ॥ वैष्णवपद्मासनसूखासीनं

स्वतवर्षुतिवोचनं ॥ तिवकाद

दिक्षवकं स्वतपीततथार्हव ॥

रुजास्त्राचमदावीना दधतीख

ऊर्गर्जनी ॥ उमवृत्तिष्टूलंष्टूलं च

नीलासलसमप्रका ॥ पातुविन्दु

कव ॥ ॐ पातुनर्हपयाधना ॥

उपधीकर्मध्यानवाजीवितं वि

वज्रविन ॥ ध्यानपूष्यं पादकां ॥ ॥

तत्तुपूजनं ॥ वैष्णवपद्मा श्रीसर्वज

नश्रीरुनीपादकां ॥ वैष्णवपद्मा श्री

सर्वजनमादनीपादकां ॥ वैष्णव

पद्मा श्रीसर्वजनजम्हनीपादकां

॥ वैष्णवपद्मा श्रीसर्वजनस्तम्हनी

पादकां ॥ वैष्णवपद्मा श्रीसर्वजन

आकर्षणीपादकां ॥ वैष्णवपद्मा १४ श्री

सर्वजनशुभानुच्छदनीपादकां ॥

वैज सुग्री॥ श्री आपधी कर्म हृदालि
काय सुग्री॥ पादकां॥ एवं वलिगृह
श्रद्धा॥ आवाहनादि॥ यानि मू
डादर्शयत्॥ ॐ ति आपधी पूजा॥

॥ कर्म ४ श्री कश्चिर्न॥ वैज वरवा
स्नाय पादकां॥ वैज सिंहासनाय
पादकां॥ ॐ न॥ वरसिंहासनाद
वं हिमकुण्डसंनिहं॥ एकवक्त्रं
दिनजं च दिव्यरूपामहादेव॥ च
तुर्भुजमहमान्निष्ठुनादं च ध
वहं॥ दद्यात्कदा नूजालिंगं कपा
लं पूरुपाशुध॥ दद्यात्त्रिवक्त्रं धृ
त्वा तु सर्वदुःखयुक्तावहं॥ वामा
वृक्षं गतादवाग्निनजदव्यवृषि
णा॥ दिव्यवलागरुषाक्षी दद्यात्
रूपविधना॥ एवं धत्वा महादे
वं श्री कृष्णं पत्रमंशुवं॥ ॐ न पूष्यं
पादकां॥ ॥ पूजनं॥ वैज सुग्री॥
आनन्द हाकिरे ववानन्दवा सुग्री॥
नाधिपय सुग्री॥ श्री श्री कृष्णा

सोमाग्नी नवशोवनी॥ वज्राशक्त्या देवी॥ १

अथ स्तुतिः किं स हि ता ये पादकां
॥ एवं वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ आवाह
नादि ॥ चन्दनादृत्य पूष्यं नमः ॥
शिष्टं नमूदायाति मूडां दर्शयत्
॥ जाप ॥ स्तुति ॥ स्वाहा ॥ ॐ तिष्ठ
कश्चिन्न ॥ ॥ तत्ता माह का च
नं ॥ वैजं सास्त्राय पादकां ॥ ध्यान
रं सासनं स्तितादवी आगमजिन
प्रकाशितां पीतवर्षा चतुर्वाहं
सर्वालं कालरूपिणं ॥ अक्षयपू
कवा दक्ष वासववक्त्रपाशधरा ॥ अ
वर्णपूयत्सु ॥ नन्दविन्दुप्रसंयुतं
॥ ध्यानपूष्यपादकां ॥ पूजनं ॥
वैजं अथर्व अमांघववदविम
लं अमां अंबुधायत्येविश्वपाद
कां ॥ ॥ एवं वलि ॥ आवाहनादि ॥
पद्ममूडां दर्शयत् ॥ ॥ वैजं
सास्त्राय पादकां ॥ ध्यान ॥ वैजं वष
ट्ककाटिवन्दारुजिनतामाचरु
रुजा अक्षयधवा दवी ववदा

पुरुषपाद॥ कवर्गपूजयद्दवी
 दद्यागलसमारुता॥ चन्द्रविम्ब
 प्रसंगलसूत्रायावत्सदा॥ **ध्यान**
पुष्पपादकां॥ ॥ पूजनं॥ वैजं अथा
 नमो माधवनदविमलजोमोक्षी
 कंमारुश्वरीदवीविश्वपादपूजां
धनवलि॥ आचारुनादि॥ त्रिष्टु
 लमूत्रादर्थयत्॥ **॥ वैजं मयूना**
स्त्रपादकां॥ ध्यान॥ वैजं मयूना
 सनसमावृता वानार्ककाटिका
 म्बिका॥ चतुर्भुजाक्षमालाव वाम
 हाकिधवावना॥ वनादां वामकपा
 लं च सर्वालं कालरूपिका॥ च व
 र्गपूजयद्दवी खन्दन्दनरुसंज्ञ
 मां॥ दवीकूटनवर्जन पूर्ववत्सर्व
 कावयत्॥ **ध्यानपुष्पपादकां॥ ॥**
पूजनं॥ वैजं अथा नमो माधवन
 दविमलजोमोक्षी चक्षोमावी
 विश्वपादकां॥ **धनवलि॥** आ
 चारुनादि॥ त्रिष्टुखा मूत्रादर्थयत्

तु॥ ॥ वैंजगवृजस्त्रायपादकां
॥ ~~धन~~ ॥ वैंजखगसासनमावृ
टास्यामवर्षुमहाशक्ति। सर्वा
लंकालसारुगिचतुर्द्वजाविना
जरु॥ चक्रकोमादकीवामचवय
वामपातधा। टवर्गपूजयद्वी
यद्वीकूटतयेवच॥ पूर्ववशा
यतद्वीचक्रध्वयोपसिद्धिगा॥
मारुकूटसमायुक्तं पूर्ववत्सर्व
कालयत्॥ वैष्णवीपूजयत्येवंस
र्वकामार्थसिद्धिदा॥ ~~धन~~ पूष्यपा
दकां॥ ॥ वैंजश्रुधावज्रमाध
ववदविमलजोष्मां धीटं वैष्ण
वेविचित्रपादकां॥ ॥ ~~धन~~ नवल्लि॥
आवाहनादि॥ तिष्ठिखामूडां
दर्शयत्॥ ॥ वैंजमहिखास्त्रा
यपादकां॥ ~~धन~~ ॥ वैंजमहिष
स्तुनृषवर्षुगुहादाहारवहा
रुषिता। रुदात्रमुखद्वष्टाहा
रुनिचन्द्रमुखप्रहा॥ छिषनउ

विश्वानरं रुद्रवत्त्वावसंयुक्तं ।
उद्धाकलालवदना रुद्राष्टमं
ध्वनिना ॥ दक्षिणपङ्कजावाति ।
कलिकापालवामका । ववदा
वामकापालं सर्वालं कालरूपि
ना ॥ तवर्गर्गैरुपूज्यं कृष्णं कृ
टं तस्येव च । मूढादिपूर्ववत्सर्व
पूजितां सर्वकामदा ॥ **अनपूर्य**
पादकां ॥ ॥ पूजनं ॥ वैष्णव
अमाद्यववदविमलङ्काणां श्री
तं वा नाहिविचित्रपादकां ॥ **ध्वनिं**
वलि ॥ आवाहनादि कालमूढां
दर्शयन् ॥ **॥ वैष्णवगजास्त्रायपा**
दकां ॥ अन ॥ वैष्णवदिवदसंस्मितां
दवीवामाकलववप्रका । किमि
ट्टिकाकनशाव सर्वालं कालरूपि
ना ॥ चतुर्भुजासंमिपद् वामच
उपध्वनिना । वलदावामकपालं
वपवर्गपूजितमदा ॥ दवीकूटं
समस्यन्नेनैव दक्षानुपूर्वता ।

सर्वसिद्धिप्रदादवी सर्वपापप्र
माचनी ॥ **ध्यानपूर्यपादकां ॥** ॥
पूजनं ॥ वैंग अ धा न अ मा ध व न
द वि म ल हं प्रो धा पं ॥ न्दा य क्षी
वि र्व पा द कां ॥ **धनवलि ॥** आ वा
रु ना दि ॥ गु घ मू डा द र्श य त् ॥ ॥
वैंग प्र ता त्ना य पा द कां ॥ **ध्यान ॥**
वैंग ठा ठि मि क्क स मा प्र द्वा ठि न ठं
च न्द्र नू पि क्षी ॥ ड ष्टा क लाले व द
ना रु जा ष्टा मू षु धा वि क्षी ॥ न्य वा
दि षा व अ न्ना च ध ना च मू ख भ
रु ऊ ॥ उ या द षा न्द्र मू षु षू स र्वा
दि हि ती च र्चि का ॥ दी प च र्म प
वि क्षा ना भ ष ला घ षु ला व का ॥
ख र्च रु त क धा वि च उ म नू ख
द्वा ङ्ग भ व च ॥ क हि मू षु अ हि म
रु चि ॥ षा ग व क क पा ल धा ॥ पि
सा च रु त व ता ला षि वा व मू स वं
गि का ॥ उ वं वि क्षा रु चा मू षु य
व र्ग पू ज य त्सा दा ॥ दा वा दि वि ज

पूरुहाहि माह कटं न (ये व च ॥
 मूडाया पूर्ववद्वी. गा न व वरु
 नापिता। अहिष्ट सिद्धिदाद्वी.
 चाम्भुच शुमानिनी॥ **ध्यानपूष्यं**
पादकां॥ ॥ पूजनं॥ व्रैज अद्या
 व अमाधे व न द विमल लं जा यो
 धाय चाम्भुये वि च पादकां
॥ धनं वलि॥ आ वा रु ना दि॥ का
 य मूडा॥ **॥ व्रैज सिंहा स्नाय**
पादकां॥ ध्यान॥ सिं ह लु का टि च
 न्दा रु दि न जा सा च रु रू जा। ख
 म्भुत क ध ना द वी व न या वा म
 पा रु धा॥ धा व र्ग म च नो धा य रु
 न न व रु म लु का। पूर्व व त्स र्व
 य व्या नि डा प य प न म श्व वी॥ **ध्यान**
पूष्यं पादकां॥ ॥ पूजनं॥ व्रैज
 अद्या व अमाधे व न द विमल लं जा
 ध्मो धी धं म रु ल लक्ष्मी वि च पाद
 कां॥ **वलि गृह्ण १ स्वाहा॥** आ
 वा रु ना दि॥ वि न्द मू डा द र्श य त्॥

ॐ तिमाहकागनपूजा ॥ ॥

नमस्तु चन्द्रपूजा ॥ वैश्वदेव महाका

लायपादकां ॥ वैश्वदेव दौर्द्वन्द्व

४द्वयपायपादकां ॥ वैश्वदेव

आसनायपादकां ॥ वैश्वदेव आस

नायपादकां ॥ **आना** ॥ वैश्वदेव शुद्धरु

टिकसंकासं चन्द्रारुक् चतुर्भु

मनायकवसंकासं हिमकुल

न्दसंनिहं ॥ पञ्चवक्त्रधनं दिव्यं

पञ्चनयनाकलं ॥ महाबापि

धनं दिव्यं जगद्गुरुनमस्तुता ॥

मंत्रं वृक्षां मधुमे कर्षु कल

लमं दिव्यं ॥ पञ्चवक्त्रधनं दवं मी

प्रदुष्टविनाशकं ॥ ताम्रानूष्मस्या

मधुमे कताकृती कलाचनं ॥ द

क्षवाकृमहाकृता नागयक्ष्माप

विभक्तं ॥ कपावंशकृत्कपाक्षं प

द्वाक्षदप्यक्षयिय ॥ वामवनाय

आदिव्यं दक्षिणाननगतं ॥ ४४ ॥

खड्गवाणस्तथा मर्षं शिष्टं न

नमस्तु चन्द्रपूजा ॥ वैश्वदेव महाका

वाषट् ॥ वैंज हं हं सदा वद २ अ
नामि फाय दू ॥ वैंज त्वा मां हं स
४ क न ह्य ये वाषट् ॥ वैंज मृत्पूरु
व अस्त्राय रुट् ॥ **ॐ ति क न न्या स**
॥ ॥ वैंज की ना उप द ह द या
य न म ४ ॥ वैंज हं उ ग्र च भु य
हि व स स्वा हा ॥ वैंज मि पू म र्द
नी हि र वा य वाषट् ॥ वैंज हं हं स
दा व द न २ क व चा य दू ॥ वैंज
त्वा मां हं स ४ न रु म या य वाषट्
॥ वैंज मृत्पूरु व अस्त्राय रुट् ॥ **ॐ**
ति अंग न्या स ॥ आ धा ना दि अस्त
पू ष्टि का स नं ॥ वैंज सिं हा स्ना य
पा द कां ॥ वैंज म दि षा स्ना य पा
द कां ॥ वैंज शु क्रा स्ना य पा द कां
॥ वैंज नि शु क्रा स्ना य पा द कां ॥
वैंज न म ४ श्री की च शु या ग्रा ये
न म श्री की पा द कां ॥ **रु क्ता ध्या नं ॥**
वैंज की उ ग्र च भु म हा दे वी ॥ ध्या
य र्ग रु ग व ता हि वा । रु फ चा मि

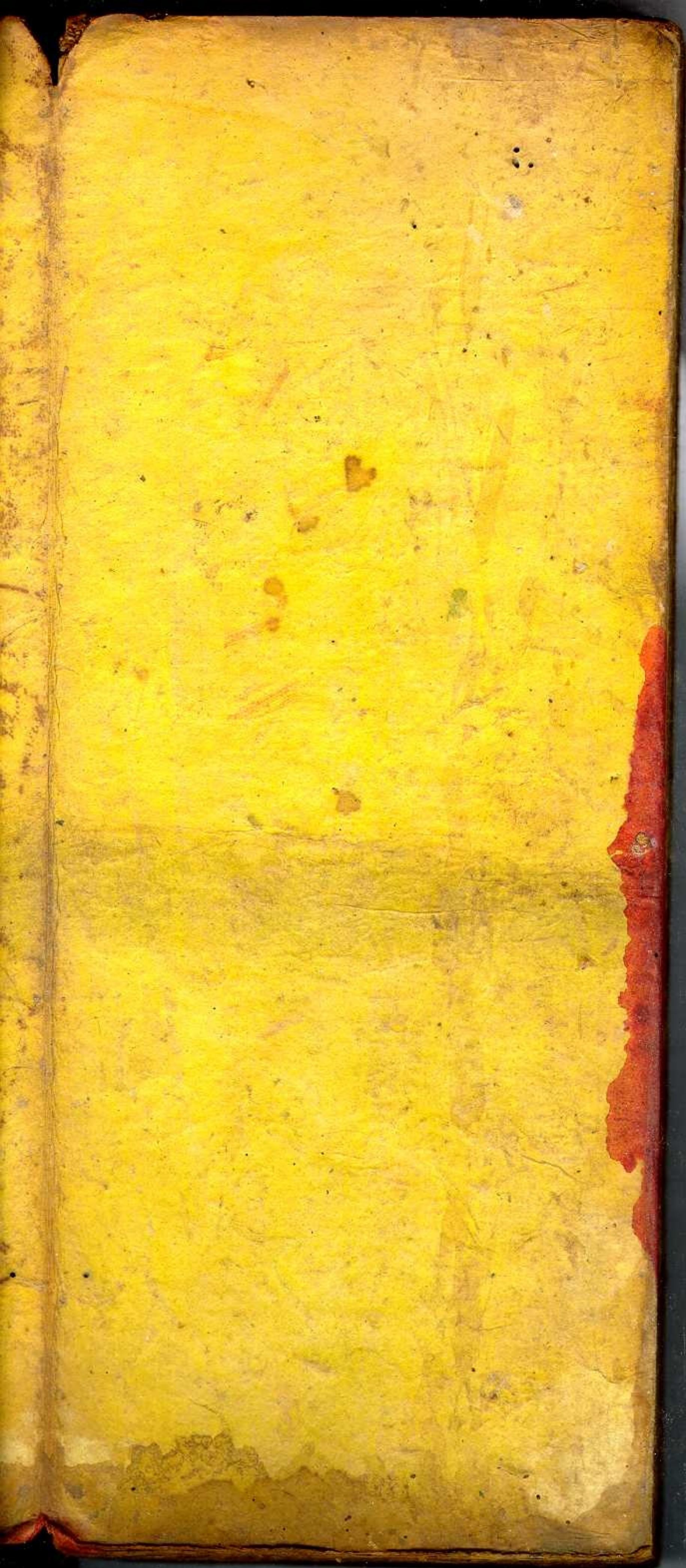


SHIA ALBION

1.613

101 414 414

ASHA ALBION



[illegible]

। स्वपवित्रानसमायूक्तं आयांठु
ॐ रुमलुल ॥ ध्यानपूषां पादकां ॥

॥ तमापूजनं ॥ वैजंजीवाऊप्र
दक्षुं नंडुप्रचलुनिपूमर्दनिरु
रुमदानद २त्वांमां रुम १ मृत्पू
रुनपादकां ॥ म ॥ वैजं वूडचलु
दवीपादकां ॥ वैजं श्रीप्रचलुद
वीपादकां ॥ वैजं श्रीवूडग्र द
वीपादकां ॥ वैजं चलुनोयिकादवी
पादकां ॥ वैजं श्रीचलुदवीपादकां
॥ वैजं श्रीचलुवतीदवीपादकां ॥
वैजं श्रीचलुचूपादवीपादकां ॥
वैजं श्रीअतिचलुकीदवीपाद
कां ॥ वैजं जौददयादि ॥ ७ षडंग
संपूष्य ॥ वैजं कात्यायनविभ्र
रु कन्याकोमावीधीमद रुना
दुर्गाप्रवादयाद ॥ मूलमकुन
संपूष्य ॥ वलि ॥ वैजं ह्मं श्रीसिद्धि
चामुलुवलिगृह्ण २ रु साहा ॥
आवाहनादि ॥ धनमूडां दर्ष

[illegible]

अमरुष्टुंग पुनवहिकमल
षादसावदिकय ॥ आधनवान
युग्मवनरुकवल्हमाग्रकाला
समममनकर्मवर्कशुरुस
तदननसप्रदानकलक्षी ॥ ॥

वैज आधनादि अष्टपृष्ठीका
सन ॥ वैज पद्मास्त्रायपादकां ॥
वैज वलुमलुलायपादकां ॥
वैज वलुमलुलाधिपतयवम
प्रतासनायपादकां ॥ वैज सूर्या
मलुलायपादकां ॥ वैज सूर्य
मलुलाधिपतयविष्णुप्रतास
नायपादकां ॥ वैज अग्निमलु
लायपादकां ॥ वैज अग्निमलु
लाधिपतयवृद्धप्रतास्त्रायपा
दकां ॥ वैज षाकिमलुलायपा
दकां ॥ वैज षाकिमलुलाधिपत
यवृद्धप्रतासनायपादकां
॥ वैज वाममलुलायपादकां ॥
वैज वाममलुलाधिपतयसदा

द्विवधतासनायपादकां॥ वैजव
 षासनायपादकां॥ वैजसिंहास
 नायपादकां॥ वैजकौस्तुभावक्रि
 यतासनायपादकां॥ ॐ ह्यासन
 ॥ मूलमन्त्रनआवारुनास्तुपन
 ॥ संनिधान॥ सन्निवाधमन्त्राग
 षकलीकलक्षतांगपांगमूडा
 दर्शयतु॥ तत्ताधनं॥ वैजनीलेप
 क्षनननित्यनर्द्धपर्यक्षस्तस्मिन्
 ४। द्विनस्रवषदक्षीयावत्तसर्प्या
 स्मिन्वर्षित॥ वक्रिनास्मिन्ना
 म्नाऊरुतामुष्टिरेवव॥ क
 दानालानकयाष्टाष्टकाक्षीकटि
 मुद्रास्यवैतवान्॥ विरुक्कलेव
 कध्वजं दानश्चदकवाहुरि॥
 पात्रिजातजायमालापुष्पका
 रुयकंकवे॥ अनाद्यादुदया
 त्यावकचर्मावृत्तगुह॥ दवा
 वृत्तक्षमक्षनचसुदेवसंस्मिता
 नव॥ प्रसंगदक्षगमानामथा

नरुक्रमकव॥ ॥ वैजनीवाञ्ज
नसमप्रकाकडिवपामहादनी
ॐषट्काद्यादहाउजासर्प्यास्त्रि
नलवचिन्ता॥ म॥ गुमालाधनीवा
डीदष्टांकलालिकानना॥ म॥ द
दहाम्बकादवीवर्चवार्दधिवा
वूहा॥ व्याघ्रचर्मपनाधनासिं
हचर्मरुनीयका॥ दिव्यारुनक्ष
रुषाङ्गीमूर्द्धहास्यदासिनी॥
तस्याऽपीगडलंवकुमरुवस्या
मसन्निहं॥ दक्षि॥ हारुपुवर्धुञ्ज
तत्संमुखपदक्षिणं॥ पूर्ववर्कुरु
वदकुमीसुऊंस्त्रिकापम॥ स
रुसुसूर्यसंकारंमूर्द्धवकुप
नार्चिणं॥ चोवकूपचवामचद
रुकर्धुश्रुतिष्वपि॥ नासाग्रवी
नचूलीच॥ तलअपिक्रमात्मकं
॥ हिलाचिञ्चानूलपंगमवकु
बुविम्यदं॥ कलसौम्यञ्जवामो
ग॥ पूर्वाचदक्षकर्धुग॥ पना

वकुमूर्द्धद (६) तर्मसृकपना
 विदं सर्वदष्टाकवाला वकु
 हाकुनिहामुना ॥ अस्त्राधस्या ४
 प्रवदामि कुडिकाया ४ मरुतकि
 च ॥ दक्षिणप्रयागनवामच
 वविजानत ४ ॥ मिथूलचक्रवजा
 नि ॥ अरुहं वकर्तुं क ॥ दक्षिण
 वामकादद्या नीलात्पलसमान
 कं ॥ अन्यश्च मृगुखदाङ्घ्रि
 पूरकधनस्तथा ॥ कपालं वाम
 कपाकं सिंहसनहावाहनी ॥ प्र
 संगदरुमागनासुंथानरुक्
 माववित् ॥ वृजस्त्रां स्त्री ॥ अस्त्रा
 विहातिकर्मद ॥ दक्षिण वदवा
 स्त्रा ॥ अन्नपूष्यपा ॥ दक्षिण ॥
 द्यावीनयागिनीस्थापादकां ॥
 ॥ तिष्ठा नमध्वविचिन्तय ७ ॥

॥ पाशाचमनीय अस्त्रद्वि ६ उ
 द्धरुनं निर्ममर्चनं स्वानं अलिखा
 नं विलपनं वसुलं कालं सका

लकट ॥ अग्नि, ००१६११ न, ने अत्य
वायु, मध्य, चतुर्दिक्, अस्तु क
मदयन, आचमन, मूलां दक्षिण
त ॥ मूलमस्तु हा सं पूष ॥ वै ज अ
धो व दौ थ धा व दौ धा व धा व न
व दू रं सर्व न सर्व न सर्व न सर्व न ॥
जो वू ड वू प ड १ पा द कां ॥ वै ज वै
व ज कु डि ना स्तु न ला का क र्ष नी
जो कामा म् डा व णी, जो स्त्री म ला
क्षारु का व णी वै सा म १ धी पा द
कां ॥ वै ज न मा रु ग व ति स्तु कु डि
का ये जो जो डू धा व अ धा व अ
धा वा म् खि क्क च्छो कि नि २ वि च्छे पा
द कां ॥ वै ज न मा रु ग व ति स्तु कु
डि का ये स्तु स्तु स्तु द न्न न म
अ धा वा म् खि क्क च्छो कि नि २ वि
च्छे पा द कां ॥ वै ज न मा रु ग व ति
सि ड्ढ स्तु स्तु कु डि क्क स्तु स्तु स्तु
ख ग वै धा व अ धा वा म् खि क्क
च्छो कि नि २ वि च्छे पा द कां ॥ वै ज

ॐ आनन्दहाकिरेववानन्दवा
दो नाधिपतयस्यां पादकां
॥ वै ज्ञेयं ॥ आ नन्दहाकि
रेववानन्दवा मद्राविश
वायश्चवा ॥ ॐ पादकां ॥
मूलषड्भुजं व ॥ ॐ संप्रथ
॥ आवाहनादि ॥ ॐ धनया निम
डांदर्शयतु ॥ वै ज्ञेयं गुर्वीववा
गिनीत्यापादकां ॥ ॥ तत्तात्त्विका
सम ॥ ॐ ॥ वै ज्ञेयं यवदीप
वलादवीश्रीमद्रादंदुर्दुर्गपाल
॥ ॐ श्रीकृतयूगश्रीअष्टियान
मद्रामूडापी ॥ ॐ श्रीअष्टियाम्नाद
वीश्रीअष्टिनाथदवश्रीवका
म्नादवीश्रीआधारीशानन्ददव
श्रीकृकाविमरुताविकावृद्धश्री
कदम्बवृद्धश्रीउदयगिनिपर्व
तश्रीवर्द्धकनाथरुउपालपद
श्रीकृदिकानन्ददवपादकां ॥ म
॥ ॥ ॐ ॥ वै ज्ञेयं वन्दुदीपरीम

नाम्नादवी. श्रीसुगंधिद्वयपाला
ॐ श्रीरुतायूग. श्रीजालंधवम
दावूडापी०. श्रीजालान्नादवी. श्री
जालीसेनाथदव. श्रीकवालान्ना
दवी. श्रीकृत्रज्ञाननन्ददव. श्रीकृ
कारिमदंकाविकावृद्ध. श्रीदीन
वृद्ध. श्रीदिमगिविपर्वत. श्रीय
मदधुदुपालपद. श्रीकृद्विका
नन्ददवपादकां॥ दक्षि॥ २ ॥

वैजम्बुजनदीपकलनादवी. श्री
लपा. लदुपालन्नादापवयू
॥ श्रीपूषुगिविमदामूडापी०
श्रीपूषुम्नादवी. श्रीपूषु. शना
थदव. श्रीचक्षुम्नादवी. श्रीचक्षु
ज्ञाननन्ददव. श्रीकृकालिमदंका
विकावृद्ध. श्रीविशिनीवृद्ध. श्री
अननगिविपर्वत. श्रीविमलद
उपालवृप. श्रीकृद्विकानन्दद
वपादकां॥ उरु॥ ३ ॥ वैजम्बु
श्रीवत्तदीपधर्मादवी. श्रीम

५ हाकायदेउपालप्रां श्रीकलीय
ग. श्रीकामरूपमहामूडापी॥०
श्रीकामविजयाम्बादेवी. श्रीका
मीक्षनाथदेव. श्रीमहाकूष्माण्डा
देवी. श्रीमहेश्वरी. श्रीमहानन्ददेव. श्रीकृ
काविमहकुवि कारुह. श्रीविल्ल
ह. श्रीसामगिनिपर्वत. श्रीव
रुह. श्रीरुहपालवृषाकीर. श्रीकृ
दिकानन्ददेवपाइको ॥ ३॥ ॥ ५॥
॥ ४ ॥ ॥ ३॥ श्रीमहावल्लदीप
श्रीधर्मादेवी. श्रीमहाकाय
देउपालप्रां. श्रीश्रवतावयू. ग.
श्रीपनापवचन्द्रपी॥०. श्रीचन्द्र
म्बादेवी. श्रीचन्द्राक्षनाथदेव. श्री
मातङ्गिस्थम्बादेवी. श्रीमहेश्वरी
नन्ददेव. श्रीकृकाविमहकुवि
कारुह. श्रीपाविजातवृह. श्री
श्रमहवली. श्रीमरूपवृह. श्री
विजयनाथदेउपालसर्वव्यापी
सुद्धी. श्रीमहेश्वरी. श्रीकृदिकान

न्यदवपादकां॥ पश्चिमना॥ ५ ॥
 मध्यमिका वपादकां॥ पी० प० ३३
 कां॥ वै० ५ प० ३३ पी० १० स्थावलिंग
 द्वा० २ स्था० ॥ ॥ वै० ५ श्री अ० व०
 व० पी० १० श्री कृ० त्रिका पादकां॥ मध्य
 ॥ वै० ५ श्री हो० ल० पी० १० श्री व० व० वा पा
 पादकां॥ नै० म० ॥ वै० ५ म० द० न० पी
 १० श्री म० रु० ना० विका पादकां॥ वा० ५
 वै० ५ श्री के० वा० ५ पी० १० श्री क० म० वा पा
 दकां॥ पूर्व॥ वा० य० वा० का० ५ पी० १०
 व० रु० ॥ ॥ वै० ५ अ० व० वा० वा० दि० पी
 ० व० रु० स्था० वलिगृ० द्वा० २ स्था० ॥
 ॥ वै० ५ श्री आ० दि० वि० म० ल० श्री म० र्
 ना० पादकां॥ उ० रु० ॥ वै० ५ स० र्व० रु०
 वि० म० ल० श्री प० लि० न्डी पादकां॥ पूर्व
 ॥ २ ॥ वै० ५ श्री या० ग० वि० म० ल० श्री व०
 वी पादकां॥ द० दि० ॥ वै० ५ श्री सि
 द्वि० वि० म० ल० श्री व० म्प० का पादकां॥
 पश्चिम॥ ॥ वै० ५ श्री स० म० य० वि० म०
 ल० श्री कृ० त्रिका पादकां॥ मध्य॥ ॥

उरुवपद्विक्रमसपूजयन् ॥ ॐ मि
 ॐ नका (६) ॥ वैशविमलपञ्चक
 सावलिगृह २ स्वादा ॥ ॥ तमाष
 दाससंपूज ॥ वैशग्रीमालिनीपाद
 कां ॥ वैशमन्दीलोकायेपादकां ॥
 पूर्वस ॥ वैशग्रीचलादायेपादकां
 ॥ वैशग्रीमदारायेपादकां ॥ नैम
 त्या ॥ वैशग्रीगुह्यायेपादकां ॥
 वैशग्रीर्जुविद्यायेपादकां ॥
 वायुया ॥ वैशग्रीववायेपादकां
 ॥ वैशग्रीखववायेपादकां ॥ ॐ
 नाना ॥ वैशग्रीरुववायेपादकां ॥ वैश
 ग्रीनिबलायेपादकां ॥ आनय ॥
 वैशग्रीशुभयिपादकां ॥ वैशग्री
 आरुह्यनगसमाख्यायेपादकां
 ॥ पश्चिम ॥ ॐ तिदादहाषका (६) स
 पूज १२ ॥ धनवलि ॥ ॥ तमावि
 शुद्धादिआरुह्यनं ॥ ४ ॥ ८ ॥ वैश
 दौदौ मरुत्ताविकायेकोसूकला
 धिसौसौसूस्मू विभुद्धिसाकिनी

यप्रकृतिपूर्विरवञ्जीष्मनन्ददव
पादकां॥ **पूर्व**॥ वैजधावञ्जधाव
अधामासूखीवद्वनूपायेहे म्लम
काधिकाँकाँकूँकूँ अनादुतकादि
नियगुलपूर्विविष्टुञ्जानन्ददवपा
दकां॥ **नेमहा**॥ ३ ॥ वैजजाँजाँदूव
वैवसिखदूँपूँवधुधिलाँलीलँलूँ
मसिपूवकलाकिनियपूवीमहूँ
मञ्जीष्मनन्ददवपादकां॥ **वायुवा**
॥ वैजदूँकूँदिकायेकूलदापाये
जाँमूँपेदाधिवाँवीनूँनूँ स्वाधिसू
नवाकिनियधीपूवीअनूँनूँगृही
ष्मनन्ददवपादकां॥ **वृष्मने**॥
४ ॥ वैजनमारुगवतिदुल्कमला
येजाँनूँरुवनाधिजाँठाँडूँयूँ आ
धानञ्जकिनियेमनपूवीमिष्टुञ्ज
नन्ददवपादकां॥ **आभय**॥ ५ ॥
वैजकिनिरविष्टेकाकनायज४
लूँगलाधिजाँजाँदूँदूँ आह्लाहा
किनियपूवग्राअखूँञ्जीष्मनन्द

दवपादकां॥ पश्चिम॥ ४॥ त्रैलोक्या

यौयंयौललाट्यरुहिययरु
हापूत्रैनीशीकोलासनन्ददव

पादकां॥ मध्य॥ ॐतिदादिषट्प

र्वका॥ ॥ विद्युर्दपूर्वका॥ ६॥

॥ नेमस्यारुजनादुक्त॥ मनिपूव

कवायूवा॥ स्वाधिरुक्तनहु॥ ७॥

॥ आधाममनिकानन्द॥ आरूप

श्चिमउच्चरु॥ ॐतिदादि॥ ॥

त्रैलोक्यक्रियायेशीक्रियाकान

न्ददवपादकां॥ मध्य॥ त्रैलोक्य

मिजायेशीमिजानन्ददवपादकां

॥ पूर्व॥ २॥ त्रैलोक्यवर्षायेशीव

र्षानन्ददवपादकां॥ ३॥ दक्षिण

॥ त्रैलोक्यषष्ठायेशीषष्ठानन्दद

वपादकां॥ उरु॥ ४॥ त्रैलोक्य

द्वितीयायेशीद्वितीयानन्ददवपा

दकां॥ पश्चिम॥ ५॥ ॐतियुगव

रुक्ताग्निका॥ ॥ त्रैलोक्यशुक्ल

लायेशीआयानन्ददवपादकां

॥ पूर्व ॥ १ ॥ वैष्णवी कलाये अनाया
नन्द दव पादकां ॥ आश्रय ॥ २ ॥ वैष्ण
वी शिवाये श्री अचिन्ता नन्द दव पा
दकां ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ वैष्णवी मित्राये
श्री अवतानानन्द दव पादकां ॥ ने
मत्या ॥ ४ ॥ वैष्णवी को दक्षये श्री अ
रुनन्द दव पादकां ॥ पश्चिम ॥ ५ ॥

॥ तिस्रु कलादि पञ्चकां ॥ नेमत्या ॥

॥ वैष्णवी ॥ कुये श्री वृद्ध कर्मा
नन्द दव पादकां ॥ वायव्य ॥ १ ॥ वैष्ण
वी अरुनाये श्री मध्व कर्मानन्द
दव पादकां ॥ उरुव ॥ २ ॥ वैष्णवी कि
याये श्री बालक कर्मानन्द दव पा
दकां ॥ श्री धामना ॥ ३ ॥ वैष्णवी कृति
काये श्री डाडिठ कर्मानन्द दव
पादकां ॥ मध्व ॥ ४ ॥ ॥ तिस्रु वृच
रुक्म पश्चिम ॥ ॥ वैष्णवी ॥ मध्व ॥
पादकां ॥ मध्व ॥ वरुक्म प
रुक्म पदं वरुक्म प रुक्म व
रुक्म ॥ अथ वरुक्म पूजनं ॥ विष्णु पदं

वैष्णवादिभिरुक्तं नमस्तस्मात्तु आनादृत्य
मनिपूर्वक वायूया स्वाधिसृष्टेर्न
तु ॐ ह्रीं क्लीं । आ ध्या व म शि का ल य
। आ हूं पश्चिम उच्चारं ॥ ॐ ति ष द्

कपूजनं॥ ॥ अथ पूर्वादिक्षनं
षट्कवह्निः४ शृङ्गानकलद्वंद्वमालि
न्यादिपूजयत्॥ तद्यथा॥ ॥

॥ वैष्णवामात्मनि नमो पादुकां पूजयामि ॥
॥ वैष्णवामात्मनि निधिका पादुकां ॥

वैज श्रीचलाहापादकां॥ वैज श्री
महाहापादको॥ वैज श्रीगुह्याहा

पादकां॥ वैंश श्रीगुरुविद्यापाद
कां॥ वैंश श्रीगुरुविद्यापादकां॥ वैंश

श्रीखचनापादकां॥ त्रैलोक्यश्रीरुच
नापादकां॥ त्रैलोक्यश्रीनिबलापादकां॥

॥ वैष्णवी श्रुता पादकां ॥ वैष्णवी श्रुता
हस्तनगलमुखपादकां ॥ ॐ ति

मालिन्यादि ॥ १२ ॥ ॥ नमः ॥
 श्रुवाङ्गागमनात्तुम्हादिश्रुयन्तु

यः पूजयन् ॥ जैः श्रीमन्नानुग

पादूकां॥१॥ वेंग श्रीचिनुनापादू
कां॥२॥ वेंग श्रीविश्रुत्मा ला पादूकां
॥३॥ वेंग श्रीपीड ला पादूकां॥४॥
वेंग श्रीधाष्टिनी पादूकां॥५॥
वेंग श्रीसूक्ति पादूकां॥६॥
वेंग श्रीनिर्माहा पादूकां॥७॥
वेंग श्रीनिर्विकाना पादूकां॥८॥
वेंग श्रीनिर्वाम्हा पादूकां॥९॥
वेंग श्रीनिवञ्जना पादूकां॥१०॥
वेंग श्रीसोम्या पादूकां॥११॥
वेंग श्रीमहाववा पादूकां॥१२॥
वेंग श्रीवाधवती पादूकां॥१३॥
वेंग श्रीवाक्ष पादूकां॥१४॥
वेंग श्रीलीला पादूकां॥१५॥
वेंग श्रीलाला पादूकां॥१६॥
वेंग श्रीहला पादूकां॥१७॥
वेंग श्रीनिनामया पादूकां॥१८॥
ॐतिमनान्नमदि॥ ॥तमलि
हृपूजनं॥ वेंग हंसूर्यमधुला
यदादधरुजकलात्मा पादूकां

॥ पूर्व उधल पांयां ॥ वैंज संसामम
छालाय पाद कलात्मा पाद
कां ॥ दक्षि (समधल पांयां) ॥ वैंज
वैंज शिमधुलाय दक्षधम्मकला
त्मा पाद कां ॥ उरु न अथवा न
खायां ॥ ॐ तिति वरु पूजा ॥ ॥

तत अरु पशु पूजनं ॥ वैंज अवर्ग
४ धालला ट प्रया (ग आखा ये व
झाणी सर्वम झला वे ध्वा वैंडी क
डिका अरु रु व वा ये पाद कां ॥ १ ॥

पूर्व ॥ वैंज क वर्ग ४ मुख वाना ध
स्या ॐ लामा दध्वी चर्चि कां धु
हिनी आ (प्रयी कडिका ॐ रु रु
न वा य पाद कां ॥ २ ॥ ॥ वैंज च

वर्ग ४ क १४ काला पूर्या उरु की
मानी या ग के वरु का या म्या कू
डिका उरु रु व वा पाद कां ॥ दक्षि

(स) ॥ ३ ॥ वैंज ट वर्ग ४ धा दक्षि अ
दक्ष संसपा वे धु वी रु व सि द्विष
ठिनी न संस कडिका अरु रु व

वपादकां॥४॥नेमत्या॥वैंगरुव
र्ग१ध्यानाहो जयत्यां१षावावा
हीकधुकीवानूणीकुडिका१
दरुववापादकां॥५॥पश्चिम
॥वैंगपवर्ग१ध्यागुधुवनिरुव
षा॥॥डायणीकिलि२लावज
कीवायवकुडिका१दरुवव
पादकां॥६॥वायव॥वैंगयव
र्ग१ध्याजाम्वा१कामर्क३वाचा
म॥अकालनाडिचिपिकाकोव
नीकुडिका३दरुववपादकां
॥७॥उरुव॥वैंगधवर्ग१ध्यापा
दया१दवीका१अज्जामराल
द्वाहीषणीकोरुकीवेधनीकु
डिका११दरुववपादकां॥८॥
वैंगन्यां॥अरुकुठदयनआव
लेनमूडादधायत्॥मूलमरु
न॥॥तिअरुपुरुपूजा॥ ॥
तत१अरुगुटीपूजनं॥वैंगध्या
गगनानन्ददेवपादकापूजया

मि॥ १॥ **पूर्व**॥ वैजं श्रीकृमूजनन्द
दवपादुकां॥ **आमय**॥ २॥ वैजं श्री
पद्मानन्ददवपादुकां॥ **दक्षि**॥
३॥ वैजं श्रीहेनवानन्ददवपादु
कां॥ **नेम**॥ ४॥ वैजं श्रीदवान
न्ददवपादुकां॥ **पश्चिम**॥ ५॥ वैजं
श्रीकमलानन्ददवपादुकां॥ **वा**
युवा॥ ६॥ वैजं श्रीशिवानन्ददव
पादुकां॥ **उरु**॥ ७॥ वैजं श्रीवा
मानन्ददवपादुकां॥ **ब्रह्म**॥ ८॥
वैजं श्रीकृष्णानन्ददवपादुकां॥
मध्य॥ ९॥ अरुकूटद्वयन आच
मनमूडादर्शयत्॥ **ॐ**ति अरुष्ट
क्षपूजा॥ **॥**तत्ताषादक्षपक्षपूज
नं॥ **पूर्वादि** ॐ **क्ष**नं॥ वैजं श्रीसूर्या
नन्ददवपादुकां॥ १॥ वैजं श्रीजीवा
नन्ददवपादुकां पूजयामि॥ २॥
वैजं श्रीखचवानन्ददवपादुकां॥
३॥ वैजं श्रीगर्वमूकानन्ददवपा
दुकां॥ ४॥ वैजं श्रीसिंहानन्दद

वपादूकां॥५॥ वैंशश्रीजयानन्द
दवपादूकां॥६॥ वैंशश्रीविज
यानन्ददवपादूकां॥७॥ वैंशश्री
मिज्ञानन्ददवपादूकां॥८॥ वैंश
श्रीसूरुडानन्ददवपादूकां॥९॥
वैंशश्रीविमलानन्ददवपादूकां
॥१०॥ वैंशश्रीखड्गानन्ददवपादू
कां॥११॥ वैंशश्रीमूडानन्ददव
पादूकां॥१२॥ वैंशश्रीनलानन्द
दवपादूकां॥१३॥ वैंशश्रीकेशवा
नन्ददवपादूकां॥१४॥ वैंशश्रीश्रु
मृगानन्ददवपादूकां॥१५॥ वैंश
श्री॥६॥ज्ञानन्ददवपादूकां॥१६॥
अङ्कटद्वयमूडादर्शयतु॥व
लि॥ॐतिषादहापञ्चपूजा॥ ॥
नकावाद्येषाउहापञ्चपूजन॥ ॥
वैंशश्रीकुलायपुरानन्ददवपा
दूकां॥१॥ वैंशश्रीकुलायमिज्ञान
न्ददवपादूकां॥२॥ वैंशश्रीकल्लि
कार्येमथानन्ददवपादूकां॥३॥

वैंज श्रीकुलायवीर्यानन्ददव
पादुकां॥४॥**पूर्वचतुर्दलपीत**
पूष्यनमः॥ वैंज श्रीकुलाख्यायउ
ग्रानन्ददवपादुकां॥१॥ वैंज श्रीसि
धायसिधानन्ददवपादुकां॥२॥
वैंज श्रीलक्ष्मायविमलानन्दद
वपादुकां॥३॥ वैंज श्रीकुलसुन्द
र्येलाकानन्ददवपादुकां॥४॥
दक्षिणचतुर्दलद्वेषूपूष्यः॥८॥
वैंज श्रीवकायउरुमानन्ददव
पादुकां॥१॥ वैंज श्रीहमनाख्या
यउरुवानन्ददवपादुकां॥२॥
वैंज श्रीविमलायमूरुयानन्द
दवपादुकां॥३॥ वैंज श्रीकुटिला
यलाकानन्ददवपादुकां॥४॥
उरुचतुर्दलनवकापूष्यः॥ वैंज
श्रीवगभयेशूङ्गानन्ददवपादु
कां॥१॥ वैंज श्रीमनाज्ञायपद्मा
नन्ददवपादुकां॥२॥ वैंज श्रीउ
न्मनायल्लयानन्ददवपादुकां॥

ॐ वैं श्री मां रुनाय विजयान
न्यदवपादकां॥४॥ पश्चिमदल
चतुष्टय (धृतपूष्य)॥ अशुक्र
दयं आचलनमूडा दर्शयत् ॥
ॐ तिषाठ क्षपणपूजा॥७॥ ॥
तत आध्वानचतुष्काक्षपूजनं ॥
आ (म)॥ वैं श्री दौं दौं दौं दौं दौं ॥
दौं दौं पालपादकां॥ नेमत्या॥
वैं श्री गौं गौं गौं गौं गौं गौं श्री कृ
लग (क्ष) नायपादकां॥ वायव्य॥
वैं श्री जौं कुलपूरुवदकनाथ
यपादकां॥ ॐ धान॥ वैं श्री स
र्वयागिनीपादकां॥ ॐ ह्यध्वान
काक्षपूजनं॥ ॥ तत आध्वानपूज
नं॥ वैं श्री लूं ॐ न्द्रायपादकां॥ वैं श्री
नूं अग्निपादकां॥ वैं श्री मूं यमपा
दकां॥ वैं श्री दूं नेमत्यापादकां॥
वैं श्री वूं ववृषपादकां॥ वैं श्री यूं वा
यवपादकां॥ वैं श्री सुकृववपा
दकां॥ वैं श्री दूं ॐ धानपादकां॥

वैंग्रं अं अ० ४ पादकां ॥ वैंग्रं उं उं
इ पादकां ॥ ॐ निलाकपावपूजा
॥ ॥ गंगाद्यालादिमध्वनं पूज
नं ॥ वैंग्रं वैंग्रं द्याला पादकां ॥ जौ म
न्व पादकां ॥ श्री कवन्ध पादकां ॥
सुं नन्दनवन पादकां ॥ मध्व ॥ सु
पादकां ॥ ॐ निलाद्यादिमध्वनं
पूजा ॥ ॥ मध्वपूजनं ॥ वैंग्रं सुं ४
दिवतत्वाधिकानपवापादकां ॥
वैंग्रं अ० धात्रजौ जौ सुं ४ सुं धात्र
वृद्धधात्रमुखीहीमहीषदिवम२
दम२पिव२वृ२वृ२वनवैंग्रं जौ सुं
रुं रुं रुं विद्यातत्वाधिकाल अ० पना
पादकां ॥ वैंग्रं वैंग्रं जौ सुं ३ सुं ४ रुं रुं
आत्मतत्वाधिकालपवापवापा
दकां ॥ ॐ निद्रितत्वनमध्वपूजा ॥
॥ गंगानकचववष० शुक्रचववष०
मिश्रचववषपूजनं ॥ वैंग्रं सुं वकच
वष श्री पादकां ॥ वैंग्रं सुं शुक्रच
वष श्री पादकां ॥ वैंग्रं सुं सुं पवम

[illegible]

अथ शिखिर्वर्चनं ॥ ततान्यास ॥

वैज नमारुगवप्रिउर्ध्ववक्रपाद
कां ॥ वैज पिङ्गलकृवपूर्ववक्रपा
दकां ॥ वैज विक्रमदहदक्षिणव
क्रपादकां ॥ वैज कर्द्धमां स (६) भासि
तसूनासर्वप्रिथउरुववक्रपा
दकां ॥ वैज दस २ पश्चिमवक्रपा
दकां ॥ ॐ तिवक्रन्यास ॥ वैज सं
श्रीवनि २ अङ्गुष्ठापादकां ॥ वैज
उर्ध्वकक्षितर्ङ्गनीपादकां ॥ वैज क्वा
लितशिखिमध्यमापादकां ॥ वैज
मायाकेलाक्षरूपसदसुपनिवृ
त्तिनीनां अनामीकापादकां ॥
वैज नावकाक्षकनिष्ठापादकां ॥
वैज मानसिश्कवतवपादकां ॥
ॐ तिकवन्यास ॥ ॥ ततान् अङ्गन्या
स ॥ वैज सङ्गुर्वनि २ हृदयाय न
मः ॥ वैज उर्ध्वकक्षित्वसखादा ॥
वैज क्वालितशिखिशिखायवषट् ॥
वैज मायाकेलाक्षरूपसदसुपनिवृ

लिनीनांकववायद्रुं॥ वैजना व
काक्षनरुययायवोषट्॥ वैज
माननि२ अष्टायरुट्॥ ॐ ह्रीं
न्यास॥ ॥ वैजपद्मास्त्रायपाद
कां॥ वैजप्रतास्त्रायपादकां॥ ॐ
न॥ शिखआचतिवकाचदिव्य
वृषामहादवा॥ शिखिकनयनश
कासदिवानानन्दन्दिता॥ पूर्वत
४॥ श्वतवर्षुरादिमकुलुन्दस
निरा॥ दक्षिणरूपवर्षुरवका
मरुमरुन॥ ॐ ह्रीं ॥ प्रसनं व
नदं सोमं किष्किरुक्माननिविह
नं॥ दिव्यवत्सजादास्यकर्षुर्
लुलरुषिना॥ शिखलंकरिकं
षट् दक्षिणरूपविलाजित॥ इष्य
नंरुट्कंकायं वामरुक्मधना
युक्ता॥ पद्मप्रतासमावृक्ताशिख
आपवमश्वरी॥ दिव्यवस्तुपवि
धास्यदिव्यानंकावरुषिना॥ ना
नापूष्यवर्मादवीनानागन्धरु

भादिता। यदि फलमाहाराग
माहव कविवलिना॥ मधुगंध
जिखलुअचपनमंभनमा नमं।
मूर्च्छा नमस्तु पापश्च विप्रदाविद
नासनं॥ **भनपूष्यपादकां॥ ॥**
नतपूजनं॥ वैजनामाहगवतिनू
दाथेरुपादकां॥ वैजनमश्वास
भुथेरुपादकां॥ वैजनमश्वास
काहामाहगभुथेरुपादकां॥
वैजनमः सर्वकामार्थसाधका
थेरुपादकां॥ वैजअऊनामनी
भंरुपादकां॥ वैजसर्वज्ञाप्र
तिरुनीनांरुपादकां॥ वैजस्व
रूपपत्रमरूपपविहृतिनीनां
रुपादकां॥ वैजसर्वसत्त्ववशी
कवभानुचुदनोमूलनममस्त
कमप्रवृत्तिरुपादकां॥ वैजस
र्वमाहदुदयपत्रमसिद्धिप्रक
र्मचुदनकवरुपादकां॥ वैज
स्वकर्मसिद्धिकवरुपादकां॥

वैज माहसंवचन शुरुं पाद
कां॥ ॐ तिनूदखु॥ वैज अथा
नअमाधवनदविमलशीअं
वज्जायलीविचैपादकां॥ वैजअ
धानअमाधवनदविमलशीआ
माहधनीविचैपादकां॥ वैजअ
धानअमाधवनदविमलशी
ॐ कोमावीविचैपादकां॥ वैज
अधानअमाधवनदविमल
शीॐ वेषूवीविचैपादकां॥
वैजअधानअमाधवनदवी
मलशीउवावाहीविचैपादकां॥
वैजअधानअमाधवनदवीम
लशीउॐ डायनीविचैपादकां॥
वैजअधानअमाधवनदवीम
लशीमंचामूअविचैपादकां॥
वैजअधानअमाधवनदवीम
लशीमूमहालक्ष्मीविचैपादकां॥
ॐ तिमहखु॥ ॥ वैजनम ४
श्रामूअरुपादकां॥ वैजउई

कहा ॥ ॐ पादकां ॥ वैज कालिचि
खरु पादकां ॥ वैज विद्युक्ति ॐ पाद
कां ॥ वैज गानकादि ॐ पादकां ॥
वैज पिङ्गल कुर्व ॐ पादकां ॥
वैज विरुत डंष्ट्र ॐ पादकां ॥
वैज कूर्डक ॐ पादकां ॥
वैज मांसं ॥ ६॥ दिगसूना सर्वपिय
ॐ पादकां ॥ वैज सरु २ ॐ पादकां
वैज नृत्य २ ॐ पादकां ॥ वैज विष्णु
२ ॐ पादकां ॥ वैज माया उला
ख रूप सरु स पवि वरु नानां ॐ
पादकां ॥ वैज नूद २ ॐ पादकां ॥
वैज कट २ ॐ पादकां ॥ वैज विवि २
ॐ पादकां ॥ वैज हिवि २ ॐ पाद
कां ॥ वैज हिवि २ ॐ पादकां ॥ वैज
चिन्द २ ॐ पादकां ॥ वैज जसनि
२ ॐ पादकां ॥ वैज जसनि ॐ पा
दकां ॥ वैज विडा वमि २ ॐ पाद
कां ॥ वैज क्षारुनि २ ॐ पादकां ॥
वैज मावनि २ ॐ पादकां ॥ वैज

सं श्रीवनि २० पादकां ॥ वैजं रुनि
 २० पादकां ॥ वैजं रुनि २० पा
 दकां ॥ वैजं घनि २० पादकां ॥ वैजं
 घनि २० पादकां ॥ वैजं घनि २०
 पादकां ॥ वैजं नमामाह गहाये
 २० पादकां ॥ वैजं चाम्भुवनदवि
 २० पादकां ॥ वैजं रुनि ॥ श्रीनूड
 खलुमाह खलुजि ॥ खलुअरु
 हावकायपादकां ॥ ॥ वंवल्लि
 ॥ चनुनाह तपूष्यनमः ॥ आवा
 रुनादि ॥ जिखलुअमडां दक्षयत्
 ॥ ॥ तिजिखलुअर्चनं ॥ ॥
 अथ ॥ मल्लनदवाचनं ॥ अर्घ
 पाठसाधनं ॥ चलमकुलस्यादि ॥
 तमानवात्मान्यासः ॥ अथ ॥ धा
 नन्यासः ॥ तद्यथा ॥ वैजं अर्घान
 जाहदयायनमः ॥ वैजं थधान
 जाहिनसंस्वाहा ॥ वैजं धानधान
 तवर्द्धनिखायेवषट् ॥ वैजं सर्व
 तः सर्वसर्वेकववायर्ह ॥ वैजं

ॐ ह्रस्व ४ कौं न ह्रस्व या ये वी ष ह ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ ति अद्याव न्यासः ॥ ॥ त क

बीडपञ्चकन्यास ॥ वैश्वज्ञान

टपादूकां ॥ वें १००० क १४ पादूकां

॥ व्रंजं मुखपादकां ॥ व्रंजं व्रंजं

पादकां ॥ त्रैलोक्यपादद्वयाः ४ पाद

कां॥ ॐ ति वी ऊ प ष्च क न्या स्त ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

द्विषमस्वाहा ॥ त्रैलोक्याधिपति ॥

वषट्॥ वैं० क्षुं० क० व० वा० य० दू०॥ वैं०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो नमो

सुययुद्ध॥ ॐ तिष्ठावद्व्यास॥

॥ आधावृक्षस्तथादि ॥ अष्ट

पृष्ठिकासनं॥ वैश्वानरावचक

सूर्यमल्ललाधिपतयनेवद्वप्र

मासनपादकां॥ वै ज स्वाधिष्ठातृ

वक्रचन्द्रमण्डलाधिपतयज्ञोवि

षु प्रताप्तनपादकां॥ वैजमलिपु

नैकवक्त्रं अग्निमं तुलाधिपकयर्थं

वृद्धप्रतापनपादूकां॥ वैजअना
दत्तचक्रहाकिमधुलाधिपतय
ध्वं॥ श्रीधनप्रतापनपादूकां॥
वैजविशुद्धचक्रअनन्तमधुला
धिपतयस्त्रेसदाहिवप्रतापन
पादूकां॥ वैजआरूचक्रअनन्त
विद्वमधुलाधिपतयद्वैवृषास
नपादूकां॥ वैजसहस्रसिंहासनपा
दूकां॥ वैजअपवापवचक्रदुर्गा
मीगवधमधुलाखनिलअन
कमलासनपादूकां॥ ॥ नताध्व
न॥ वैजवृषरुसंस्त्रितदवखव
र्धुनूपसाहितं॥ एकवर्कडिने
उंचरुजाष्टादहाध्वविहं॥ उम
वंपनधुवागश्चखरुमद्विहाव
डकं॥ हाखश्चवीनवायंचवन
दंकवदक्षि॥ वामखद्विहं॥
लंचधन॥ रुलकपाठकं॥ यश्च
कपाववर्धंच॥ अरुयंरुयनास
नं॥ पट्टनवंधितं॥ जानूवाभानू

हं च द व नां । एक व द्वा दिन ज
व अ नून व र्णु व र्णि नां ॥ द्वि दु जां
व न द्यो द द्द सिं ह स्त म रु या क व
। नाना रु व ष मा रा द्या स व द्द ष
व त्र सं य नां ॥ ॥ रु व वा न न्द व
पा यं ष ष ष ष ४ च की र्ति त ४ ।
ए वं ध्वा त्वा म द्वा द वी दि प्रं सि द्धि
कि मा न वा ४ ॥ ०० ति मूल स्त न ध्वा
नं म ध्वा वि वि क य त् ॥ ॥ ॥
त ती ल या ङ्ग प द्दं ॥ पा द्या च म नी
यं स्त न म लि स्त नं ॥ च न्द ना द्द त
सि न्द ल य रू प वी त मा ला पू ष्यं
द द्या त् ॥ त त द्धि या अ लि ४ ॥ ३ ॥
अ धा न व द्वा व ती क्षी न वा त्मा
न वा न्मी ष उ ङ्ग न पू ज य त् ॥ त त
सि का ष ष्टु ङ्ग पू ज नं ॥ स्व वा म ॥
वै ज ष्टु म द्वा मा या कृ ङ्ग कृ ङ्ग वि
या च कृ ष्व नी पा द्कां ॥ वा म ॥ वै ज
अ धा न द्दी रु स ४ आ त्म न त्वा धि
प त्म य क्रि या ष कि प वा ये नि द्वा

[illegible]

ॐ वक्राय षी षा कि स हि ता य पा
दू कां ॥ वैं ग ॐ ॐ नू नू रु न वा य
कं मा द ष्व वा षा कि स हि ता य पा
दू कां ॥ वैं ग उ उ च उ रु न वा य च
को मा वा षा कि स हि त पा दू कां ॥
वैं ग म म का ध रु न वा य ट वै षू
वा षा कि स हि त पा दू कां ॥ वैं ग ॐ
उ न्न न रु न वा य तं वा वा दी षा कि
स हि त पा दू कां ॥ वैं ग ए ए क पा न्ति
रु न व पं ॐ ला य षी षा कि स हि त
पा दू कां ॥ वैं ग डा डी रु ष ष रु न वा
यं वा मू ला षा कि स हि ता य पा दू
कां ॥ वैं ग ॐ अ ॐ सं दान रु न व वं
म दान ल द्वा षा कि स हि त पा दू कां
॥ पूर्वा दी षा नं ॥ ॐ ति अ पू द ल
पू जा ॥ ॥ त त स्ति व रु पू ज नं ॥
वैं ग सं स त्वा य पा दू कां ॥ वैं ग व न
ऊ स पा दू कां ॥ वैं ग तं त म स पा दू
कां ॥ ॐ ति डि म लु न पू जा ॥ ॥
त ता वा र्श च उ ष्का ष पू ज नं ॥ अ

अथ ॥ वैं अ श्री दों दों दों दों दों दों
४ दों दों पाल पाद कां ॥ नमः ॥ वैं
अ गं गी गूं (गै) गै ग ४ (गै) श्री कूल
ग (गै) श्व नाय पाद कां ॥ वायु ॥
वैं अ श्री दों कूल पूरु वद कना था
य पाद कां ॥ ॐ ह्रीं ॥ वैं अ यां स
र्व प्राणिना पाद कां ॥ ॐ नमो भगवते
स पूजा ॥ ॥ तत ४ पूर्व दिवा न
॥ ॐ द्वादश लोकपाल पूजनं ॥ ॥
ततः द्वादश दिग्भक्तं प्रणव स पू
जनं ॥ ॥ वैं अ द्वां द्वां द्वां द्वां द्वां
लक्ष्म नरु द्वा न क पाद कां
॥ एवं कर्म वलिंद द्यात् ॥ ॥ वन्द
न सिन्दु वय रुद्रा पवीत पूष्य ध
प दीप ने वय रुद्रा गाम्बूल प
र्श्व पद्मानं श्री कृष्ण काये सर्व भ
पदाषयामि ॥ ॥ धनया पञ्च
स्नाय पूजा ॥ ॥ ततः वलिंद द्यात्
॥ ॥ प्रथमं समय वलिं काल यत्
॥ ॥ वैं अ सर्व पी १० प पी ठा ह्यादि

॥ वेंग उका ॥ महावलि ॥ लाक
 महावलि ॥ ॥ वेंग कौं दौं दू दू
 ४ दू उपा लाय वलिं गृह २ स्वाहा
 ॥ वेंग श्री कौं कुल पूज वद कना
 आय वलिं गृह २ स्वाहा ॥ वेंग गं
 गौ गू ग ४ (गौं) श्री कुल ग (ह) श्री वा
 य वलिं गृह २ स्वाहा ॥ वेंग दू म
 दा क व वी व धम साना धि प त य व
 लिं गृह २ स्वाहा ॥ वेंग दू श्री सि
 दि वामू अये वलिं गृह २ स्वा
 हा ॥ वेंग आ का हा वा लि व स व
 ने स्वा वलिं गृह २ स्वाहा ॥ वेंग
 सर्व रु ग स्वा वलिं गृह २ स्वाहा ॥
 वेंग सर्व स्वा द व स्वा ० ० स्वादि ॥
 सम रु म नु पी (अ) स्वादि ॥ उका
 नू क मि जा द द या य वलिं गृह २
 स्वाहा ॥ आ वा रु ना दि ॥ वेंग श्री
 ना था य न म ४ ॥ श्री सि दि ना था
 य न म ४ ॥ श्री कू ऊं हा ना था य न म
 ४ ॥ वि नू छि य ॥ वेंग दू दू वलिं

दू दू
 दू दू

मृदु २ स्वाहा ॥ ॥ मन्त्र पञ्च वलि ॥

[illegible]

यगमिनीनां यथापपन्नानां मि
 दं वलिं गृह्ण २ मम सिद्धिं कुरु वरुहं
 ३ रुद्रस्वाहा ॥ ३ ॥ वैष्णवं श्रीमि
 दिं चाम ॥ ७ ॥ वलिं गृह्ण २ स्वाहा
 ॥ ४ ॥ वैष्णवं गौरी गौरी १ ॥ श्री कृ
 ल्म ॥ ६ ॥ वायवलिं गृह्ण २ स्वाहा
 ॥ ५ ॥ अथ स्वस्त्वानन्द उवलि ॥ वैष्णवं
 चर्वनापि कुरु ॥ ६ ॥ अथ पिङ्गु कुरु पि
 ङ्गुलाचन ४ ॥ इन्द्रा उक दाला दौ
 दौ द्रुयथा दीपनाम कुरु पाल
 स्था मलावल कपिल ऊण राव
 राव स्ववर्णि नन्द दाला मुख ००
 दं गंधधूपदीपने वधवलिं पू
 जा गृह्ण २ रुद्र वरुह रूप १ रुद्र २ म
 नू २ खख २ लल २ रुद्र २ दाला २
 मला उमला धिप कथ वलिं गृ
 ह्ण २ स्वाहा ॥ कथा योगिनी वलि ४ ॥
 वैष्णवं योगिनी स्वा वलिं गृह्ण २
 स्वाहा ॥ वैष्णवं उर्द्धो वरुह ७ ॥ वा
 दिहि विदिहि नल रुद्र नल निरु

लंवापातालवानलवाहालिल
पनयाथेककृष्णिकावा॥दश
पी॥अपपीअदिषूचपदकृष्णपू
ष्यपादिकनप्रीत्यादद्यासदा
न॥शुक्रविधिवलिंनापाडवीन
दुवन्धा॥साधसिद्धोचसर्वेअ
लिपिहितवलिंगृह्णमहानिफा
मं॥त्रैजयौयैयैयैयोय॥सर्वस्था
यागिनीत्यावलिंगृह्ण२स्वारा॥
विन्दुयं॥आवारुनादि॥दधु
वामकर्कनीयानीमूडांदर्शय
ता॥पञ्चवलित॥॥तत्समय
वलि॥त्रैजसर्वपी॥अपपीअनि
द्यापद्यानमवचक्षुषपक्ष
गसंक्षारसर्वदिग्गमसंस्तुता
यागिनीयागवीनन्दासर्वकर्म
समागता॥००दंपर्वमहाचक्र
क्षीना॥थावनदामम॥यैरुक्ता
क्षसर्नेदद्याशुवृपादाचनने
ता॥सर्वसिद्धिप्रसादाभेदवी

कषोरुवत्सदा॥वीवाहंयागिनी
ना॥यद्विषक्तिमहीतलं॥कज
तारुवलीदवीसमयाचावमल
क॥शुक्ति॥स्मृक्तिमन॥पृष्टिमात्स
मयास्त्रिजीवितं॥निकनयनुद
ष्टामायागिगलसंकला॥कुरु
कादि॥कुरुनानि॥इन्निमिरुवि
रापिगान॥निकनयनुदष्टानां
यागिनिगलसंकला॥अकाना
दिष्यपीभक्त्य॥सावा॥उक्ति
रिगा॥अषधीभक्त्य॥दादिदिष्ट
सुविदिष्टसुच॥महीपातालव
द्वा॥सुसर्वस्वनान्कनष्व॥यागि
नीयागयकात्मासमयतिष्ठति
साधक॥वीवकर्मसुवीवन्डा॥
सुसुक्तिनुदवता॥सिद्धाश्चप
रुकाश्चाय्या॥साधका॥द्विदिष्ट
यिन॥नगववाथगमभवा॥अट
व्याप्तिसनीधन॥वापीकूपकट
रुवरा॥महान्माहमधुन॥नाना

नृपधनाथपिपहजाविविधनि
व। तपिसर्ववसनुष्टावलिंग
द्रुसर्वत॥ ४॥ ४॥ वषगताहं न
षावेसर्वयहं हलपदं। प्रावधं
यन्मया कम्यतत्कविष्यामिय
त्तनं॥ वलिपूष्यप्रदाननसंहु
ष्टाममचिन्तका॥ ४॥ सर्वकर्मणि
सिद्धानुसर्वदाषप्रष्टानयति
ज्ञोष्किप्रवादनकृकावाकं न
माम्यदं॥ ॐ निसमयवलि॥ ॥

अथ अऊनादिवलि॥ ॐ अऊन
आपकृष्टु ॐ अऊनरु (येव
य॥ ॐ नुमहिष्टु उल्काष्टु उष्मा
ॐ अमपूरुदन॥ ४॥ अमक ७ फ
कायष्टु ७ लापादेकडरुको। ॐ
वावतष्टु उद्याष्टु ओषधीवतथाप
व॥ ४॥ अक्तका अथवाहृष्टु कम
वष्टु खलानन॥ ४॥ ॥ गमख (येव
घष्मलाहृष्टु नष्टु धानक॥ ४॥
कुतानकपा ऊढालाख्या मकाला

१० दैतृपालसमदाहता। यच्छासवर्धसूधमगच्छा
नच्छा दैतृपालका॥ (५) सावर्धविहीनानु १०

अरुतस्ववः। टक्षपालिस्तथावा
नीमनूदन्धश्चजामवः॥ दृष्टकस्तु
सकाकार्कसूदीकार्थविलस्तथा।
दनुवाधनद। श्रेवनागकर्तुः॥
पुत्रवृत्तान्॥ रुकावावीवसिंह
श्च। हृदयशोभयरास्ववः॥ यग
कावीनव। श्रेवलमोष्टावत्सनि
स्तथा॥ शुक्रदुः॥ षयालास्यः॥ सु
नासादुदुक्तस्तथा। दयानक्तकस्तु
पञ्चदशः॥ दैतृपालश्चदुर्दश॥ ए
कलि। ऊवदुकावः॥ मधमनवरु
यावरा। मरालक्ष्मीचनधानका
लामरवश्चमस्तव॥ एकदृष्टव
टवाथ। विजालवदनावसक्तु। घं
धर्ववागुहावास्तु पञ्चरव। पुत्र
लाववः॥ संगमरुविधवावोद्यः॥
पर्वतमनूतस्तथा। निज्जवग्रव
लोवक्षोनि। धानमलिरुडकः॥
वस्तुदुर्दवनाथका। यरुवाटेषू
कादुर्दः॥ अरव। श्रेववविश्याइ

शानमकवरुथा॥ च ४४ षष्ठीम
राविष्वायालयिल्लाह्मिताजगत
। मरुदुर्गमदा फालं बलिपूजा
निर्वदयम्॥ चत्वारवरुद्ररुपाल
द्विआद्यागृह्णन् वलिं रूपंगतं
चतुष्पाकी स्वं वा विवलिकोक्ति
६४॥ निर्याधिकात्री चत्वार ४ क्र
यादा ०० तव जन ४॥ वर्चनापि की
कृष्णच पिङ्गक ४ पिङ्गलाचना॥
दक्ष कलाला अनन्ता कपालरु
द्राक्षर्जला॥ कास्मीवचन्द्राख
लुमृगविमीवरुद्रुषे ४॥ पूष्यव
रुद्रुथा च ४३ पेदापेष्टगुग्गु
ले ४॥ रावित्वात्मपिष्टे श्वकमपू
जापत्राय ६४॥ चत्वारवायेष्टगा
त्राय ४ पीता काममहासदा॥ कुं
डां कुंङ्कु अमृकाय अवगव २
क्षुद्रपालमहावल कपिलज
गहावरुद्राखन जिन्नरुद्रालाम्
खगन्धपूष्यवलिपूजां गृह्ण २

हेनवववृपल हुन २ म न २ ख ख २
लल २ रु २ म हा ज म ना वि प त थ
स्वाहा । म नु स न न म नु खों वि स्थ
श्रु सि द्वि द्य म द्य । सर्व षा च न द
वि रुं ना प म र्ग म दि कं रु व न् । नि
खं च मू दि ता वा ज्ञा स चै षां व ल रु
रु व न् ॥ ॐ श्रि मा नु ल रु ग का मा
न म ग्र म नु च स द्य अ य ४ द्य व लि
॥ ॐ ह्य ज ना दि व लि ४ ॥ ॥
अ थ तौ स ष्ठि या गि ना व लि ४ ॥ त्रै
अ ज या च वि ज या चै व अ य न्ति
चा प ना जि ना । न न्द्रा रु डा त थ
ही मां क ला चै वा ष क रु थ ॥ दि
व्य अ ग्नि र्म रु या ग्नि ४ सि द्वि या ग्नि
र्म (६) श्व नी । सा कि नी का ल ना जी
च उ ड्ड क णी नि सा च नी ॥ ग म्हा वा
द्य ष ष म् रु ला पु ष वा च उ ला लि
का । शी ष णी च म रु ना द्य काला
मू खी म् रु चै व च ॥ पि षा वी रु मि
नी चै व य रु णी धू र्क टी रु थ । वि

षरुदासर्वसिद्धिः ॐ ह्रीं ॐ न
लेवच ॥ हं कासीरास्वनीदीघा
ध्रमादीकवरुषिया । मातङ्गी
काकदृष्टिश्चरुथव ४ प्रवचान
का ॥ नाड्यी ४ धावनादाचनका
दीविश्वरूपिणी । रुयक्षनीचूरी
रुत्तागुत्ताङ्गीनवरुजनी ॥ वी
प्रन्दाचमरुकातिकक्षालीविरु
तानना । कादवालीमरुडाचवा
युवेगारुजानका ॥ वाङ्माचवेष्
वीनोडीचर्चिकावेश्वरीकथा ।
वानाङ्गीनाचसिंहोचछिवद्वर्णी
चषष्टिका ॥ ॐ देव्यामरुथा
गीवल्लिगृह्णतुमसदा । चरु ४
षष्टियागिनीथावल्लिगृह्ण २ स
र्वविष्णुविनाशनायसर्वनागप्र
क्षान्तिकुन्त २ ॐ दं पृथ्वीपदी
पगन्धपतिसात्रं गृह्ण २ ह्रीं ३ स्वा
हा ह्रीं ह्रीं ॥ ॐ तिवरु
षष्टीयागिनीवल्लि ॥ ॥ ॥

अथ वक्ति षीया गिनी वलि ॥ उं जत्
आद्य क्षम हाना सा सुमुखी दुर्म
खी वला नैव शी प्रमथ मा धावा सो
म्याही मा म हावला ॥ जया च वि
जया चैव अजिता चापना जि
ता ॥ महा लकटा विवृ पाक्षी शुक्ल
नासा म मा रुका ॥ रुड काली मूरु
डा च रुड री मा मूरु डिका ॥ मरु
वती हिन नैन ॥ ॐ तिवक्ति षीया
गिनी वलि ॥ ॥ अथ महा वलि

॥ ॥ ॐ दं वीयथा तथं जीवस्य
र्थमया रुता नाग सा क पून व म
तस्मि न्मूनं महा वलं ॥ न रुषा
निष्ठ न विद्या अमा घवल द र्पि
ता ॥ ता रुदी त्वा महा दवी संसा
न रुय ना सिनी ॥ ॐ मां विद्या म
हा देवि पूष्य माना रुदि स्त्रितां
रुजा वला ति विख्या ता लरु मि
हि प्रदायिका ॥ उं ज झूं झूं
कव रुं कं काम नूपं पृं

ॐ निमदावलि ॥ ॥ तनाषडा

मनायपूजा॥ वैष्णवोऽस्त्वैवायं मया॥

श्रीपूजनाभाय. पा

ॐ श्रीगणेशाय नमः

हिताय नमः ॥ एवं वलि गृह्यते ॥

स्वारु॥ आब्राह्मनादि मूडा॥ ००

निपूर्वाम्नाय पूजा ॥ १ ॥ वैष्णवी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ निराधाय निरक्षयनी

शिवशक्तिमहिमायन

म४॥ एववालिगृह्ण २५

॥ श्री वादनादि मूला ॥

ॐ नमो दादा भगवते ॥ २ ॥

वज्रपा सुभा शक्रज्ञानाथाय क

अथ हिन्दुनामवर्णनामोक्त्या

५३

नायनमः॥ आवाहनादि मूडा

॥ॐ ति पश्चिमान्नाय पूजा॥ ३ ॥

वैंकां श्रौं वृं मां मूं जां जां दूं दूं
जां जां ॥ श्रीगुप्तेश्वर

नायनमः॥ श्रीगुप्तेश्वर

नायनमः॥ वैंकां दूं सिद्धिक

नालां जां दूं दूं नमः॥ स्वाहा

॥ श्रीगुप्तकालीकावेनायनमः

॥ वैंकां जां दूं जां दूं जां जां नमः॥

श्रीसिद्धिलक्ष्म्याय नमः॥

वैंकां मूं श्रीमहाविद्यानाथेश्वर

नायनमः॥ श्रीसिद्धिलक्ष्म्याय

नायनमः॥ नवं वलि

गृह २ स्वाहा॥ आवाहनादि

मूडा॥ॐ ति उरु नाम्नाय पूजा॥

४॥ ॥ वैंकां सां कां वाहवम

मित्रककामगी पुण्यालये मे

श्रीधनाथात्मिककामेश्वरीय

वावृडान्मथकि श्रीपादकां॥

॥ वाहवया॥ ॥ वैंकां सां दूं

दूं

कामनाउमूर्यचकजालंधवपा
१०षड्विहनाथामिकवडध्वनी
दवीविष्णुत्महाकिष्ठापादकां ॥

॥कामनाउया॥ वैंक्रीसोमूंकी
कीविजसामचकपूरुगुनी इवी
षड्वडडीहनाथामिकरुगमा
वनीदवीवस्मात्महाकिष्ठापाद
कां ॥ हाकिविजया ॥ ॥ वैंक्री

साकीमूंकीमूंकी इवीयवीजवस्मा
इवकडायानपी १०
वर्षानाथामिकष्टाडीपूवधु
नवीवस्मात्महाकिष्ठापादकां ॥

एवंवलिंगुक्तस्वाहा ॥ आवाह
नादि. मूडा ॥ ॐ तिउडान्नायपू
जा ॥ १ ॥ वैंक्रीखूंडो ० सांरूंका
तकध्वनीनमः ॥ ॐ तिअर्द्धा
म्नायपूजा ॥ ॐ तिषडान्नायपूजा
॥ ४ ॥ ॥ अथनिर्वानपूजा ॥

कुंचुड(हाषवानन्दनाथसरुजा
पनाम्नापादकां ॥ कुंअर्द्धासहा

विद्यामलमह उपनाम्नापाद
कां ॥ निवञ्जनकमलासनाय
पादकां ॥ वेंदु श्रीमहानिर्वा
लेश्वरानन्द वृन्नाथदवद्व
श्रीमहानिर्वालेश्वरीसहि
तायपादकां ॥ वेंदु हँ हँ हँ हँ हँ
हँ हँ हँ मलमलयु श्रीमहासि
र्वालेश्वरानन्दनाथदवश्रीम
हानिर्वालेश्वरीसहितायसि
र्वाकमर्वाधिकालाहवद्वो वेंन
म॥ बलिजापद्वो २॥ ॥

नावञ्जनायवि द्मह निनाका
लायधिमह रनास्रन्यपवाद
यातु ॥ बलितृक्तश्वाहा ॥ हँ हँ
हँ हँ हँ २॥ आवाहनादि ॥
नूमद्रादर्थयतु यानिमूद्रादर्थ
यतु ॥ हँ कान स्रकानन ॥ ॐ ति
कर्माञ्जनविधि ॥ ॥ तनावलिनद
यातु ॥ ॥ तनाधकिनिदूत वि
धि ॥ अयादि ॥ ऊयमानस्यपवि

[illegible]

कात्र सौ पना २ ये पाद कां ३ ॥
दथ स ॥ व्रं ज आत्म तत्वाधिका
ल सौ अपना ये पाद कां ३ ॥ का
शन ॥ अधान ॥ वडा ॥ वनी सि ॥
वलिविय ॥ उप. स्ता ॥ प्रमिस्त
॥ नर्य ॥ थन तं रुमिकाय ॥ वि
मर्जन यादा न दत य न ॥ ॥
कृ. स. रामल ॥ वा ॥ अयवा ना
दा ॥ अयादि ॥ व्रं ज विद्या पि ० म
लदा न वाय मधुल साहित्य
था साहित्य दवा गं काप्या स तनु
मं रुव ॥ नक रुषू रु विपीत पट
क्षालं विचिक्ति ॥ (वी ति नी द व
द वं ॥ १ कचि उं पटो किनं ॥ त
रुल न रु जी रुया य उ य उ ग न
पि स ॥ न रु त उं म रु स्ता रुं व रु
को ष य सं य तं ॥ सर्व पाप विनिम
कं सर्व काम रुल प्रदं ॥ पू रु पो
उ ध न धान्यं ल द्वा ॥ अपि प्रवर्द्ध
न ॥ याव रु व व रु तनु गाव द

षष्ठसु कं। यादयात्सर्वं
 वक्षी। पूनलागे समन्वितं॥ द
 क्षिणद्विचरुषदा उच्यते गुण
 वददत्त। यजमानानदथाया
 यदि चक्षानि नर्थकं॥ यजमान
 स्य यथा। गमय यथा नामदा
 साहं॥ ॐ हलाकसुखानन्दप्रा
 फिसर्वपापविनिमूकं॥ सर्वका
 मरुलप्रदं यावत्तु ववत्तु ननु
 गावद्वषसुसु कं॥ ॐ हृदवगा
 पतिस्तुर्थं निवत्तिननिं समुत्ति
 ऊर्तु॥ ॐ कदातदवपूजा॥ ॥
 थनपशुजाग॥ ॐ तिप्रकिनिद
 नविधिसमाफ॥ ॥ ॐ ॥

ॐ ॐ ॐ सर्ववृद्धता किंणीयव
 कवेलाचनीयव कवेलाचनी
 य कूँ कूँ कूँ रुट् रुट् रुट् नस्वा
 दा॥ ध्यान॥ जिया अलि॥ वलि
 था॥ जाप॥ श्री कूँ कूँ कूँ ववका
 वेलाचनीय कूँ कूँ कूँ रुट् रुट् रुट्

टुनस्वादा॥

॥

॥

यादृक्षंमपि टं दृष्ट्वा मादृक्षमपि

टं मया यदि शुद्धं मशुद्धं वा म

मदाषानदीयते ॥

॥

